नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 04, अंक 195, नई दिल्ली, मंगलवार 20 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र



● 03 अनूठा पर्व है दशहरा
● 06 पशु-पक्षियों और प्रकृति से हमारा अटूट रिश्ता
● 08 हजारीबाग में अनुकंपा पर नौकरी पाने हेतु पत्नी ने मार डाला पति को

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

दशहरा — बुराई पर अच्छाई की विजय का महापर्व

अधर्म पर धर्म, अंधकार पर प्रकाश और अहंकार पर विनम्रता की जीत का संदेश देता है विजयादशमी

पिंकी कुंडू — सह संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र



परिवहन विशेष समाचार पत्र की ओर से आप सभी को दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

दशहरा केवल एक पर्व नहीं है, यह हमारी संस्कृति, परंपरा और आस्था का जीवंत प्रतीक है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंत में जीत हमेशा सत्य और धर्म की ही होती है।

दशहरा का महत्व — क्यों मनाते हैं विजयादशमी?

1. भगवान श्रीराम की विजय: त्रेतायुग में भगवान श्रीराम ने लंका के राजा रावण का वध किया था। रावण अत्यंत विद्वान, शक्तिशाली और शिवभक्त था, परंतु उसके अहंकार, अभिमान और अधर्म ने उसे विनाश की ओर धकेल दिया। राम ने धर्म के मार्ग पर चलकर रावण पर विजय पाई। यही विजयादशमी है।

2. माँ दुर्गा की विजय: शरद नवरात्रि के नौ दिनों के बाद दसवें दिन माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध किया था। इसलिए इस पर्व को दुर्गा पूजा के समापन और शक्ति की विजय के रूप में भी मनाया जाता है।

3. सत्य और धर्म की विजय: दशहरा का संदेश है — हर व्यक्ति के अंदर भी एक रावण है — क्रोध, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या और बुराई। दशहरा हमें अपने अंदर के रावण को जलाने की प्रेरणा देता है।

रावण दहन — सिर्फ पुतला नहीं, एक संकल्प है

जब हम रावण के पुतले को जलता देखते हैं, तो वह दृश्य हमें सिखाता है कि बुराई का अंत निश्चित है। लेकिन सच्चा दशहरा तब है जब हम अपने मन से बुराई को भी जलाएं —

- क्रोध को शांति से
- अहंकार को विनम्रता से
- लालच को संतोष से
- नफरत को प्रेम से

यही है असली विजयादशमी।

संपादकीय अपील — सह संपादिका की कलम से

मेरा मानना है कि दशहरा हमें यह भी सिखाता है कि समाज में हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह सत्य, नैतिकता और मानवता के मार्ग पर चले। आज जब समाज में अशांति, भ्रष्टाचार और स्वार्थ बढ़ रहा है, तब दशहरा का संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

आइए, इस दशहरा पर हम सब मिलकर संकल्प लें:

- अपने परिवार में प्रेम और सम्मान बनाए रखें
- समाज में भाईचारा और एकता को बढ़ावा दें
- अपनी बुराइयों को त्यागकर अच्छाई की ओर बढ़ें
- महिलाओं का सम्मान करें — क्योंकि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ माँ दुर्गा का वास होता है

> अधर्म पर धर्म की विजय हो, अंधकार पर प्रकाश की विजय हो।

परिवहन विशेष समाचार पत्र परिवार की ओर से मैं पिंकी कुंडू, सह संपादक आप सभी को, आपके परिवार को, आपके प्रियजनों को दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

माँ दुर्गा और भगवान श्रीराम का आशीर्वाद आप सभी पर बना रहे।

॥विजयादशमी की शुभकामनाएं॥

मिशन 12 नवंबर 2026: स्टेयरिंग छोड़ो आंदोलन — ड्राइवर के सम्मान, सुरक्षा, अधिकार और बेहतर भविष्य के लिए देशव्यापी एकजुट

ऑल इंडिया ड्राइवर जॉइंट कमेटी के आह्वान पर देशभर के सारथी समाज की एक आवाज़ — एकता हमारी ताकत है, अनुशासन हमारी पहचान है

जारीकर्ता: ऑल इंडिया ड्राइवर जॉइंट कमेटी, संपूर्ण भारत



नारा: ड्राइवर का सम्मान — देश का सम्मान

मुख्य तथ्य

- **आंदोलन:** राष्ट्रीय स्तर पर स्टेयरिंग छोड़ो आंदोलन
- **तिथि:** 12 नवंबर 2026 से
- **उद्देश्य:** देशभर के ड्राइवरों की जायज मांगों को लेकर एकजुटता, अनुशासन एवं शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक तरीके से अपनी आवाज़ बुलंद करना
- **मुख्य सिद्धांत:** एकता — अनुशासन — अधिकार — सम्मान

संगठनात्मक सजरा एवं कार्य-दायित्व:

- **फर्स्ट लाइन:** कमांडो आसाम गौतम, प्रीतम सेन, कैलाश गौतम, अखिलेश सोनू, गुलशन शाह
- **सपोर्ट लाइन:** सभी सहभागी ड्राइवर संगठनों के प्रदेश अध्यक्ष
- **रिजर्व लाइन:** सभी सहभागी ड्राइवर संगठनों के प्रदेश सचिव
- **सप्लाई लाइन:** सभी सहभागी ड्राइवर संगठनों के प्रदेश कोषाध्यक्ष
- **कमांड लाइन (रियर गार्ड):** सभी सहभागी ड्राइवर संगठनों के प्रदेश मीडिया प्रभारी

हमारी दस सूत्रीय प्रमुख मांगें

1. राष्ट्रीय ड्राइवर आयोग एवं ड्राइवर सुरक्षा आयोग का गठन

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय ड्राइवर आयोग का गठन किया जाए। ड्राइवरों की सुरक्षा, अधिकारों एवं शिकायतों के निवारण के लिए ड्राइवर सुरक्षा आयोग बने। मारपीट, जानलेवा हमला, धमकी, अवैध वसूली आदि पर तत्काल शिकायत, निष्पक्ष जांच एवं कठोर कानूनी कार्रवाई हो। ड्राइवरों के विरुद्ध हिंसा रोकने के लिए विशेष कानूनी प्रावधान हो।

2. न्यूनतम 35,000 मासिक वेतन एवं पेंशन

समस्त पात्र ड्राइवरों का न्यूनतम वेतन ₹35,000 प्रतिमाह निर्धारित हो। न्यूनतम वेतन में खाद्य महंगाई से जोड़ा जाए। भविष्य निधि, पेंशन एवं अन्य सामाजिक सुरक्षा सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। एक ही मालिक/कंपनी में लगातार 15 वर्ष सेवा देने वाले ड्राइवरों हेतु विशेष पेंशन योजना हो।

3. दुर्घटना बीमा एवं आर्थिक सहायता

सभी पात्र ड्राइवरों के लिए राष्ट्रीय दुर्घटना बीमा योजना लागू हो। दुर्घटना में चालक/गंभीर रूप से घायल होने पर ₹15 लाख तक की सहायता, दुर्घटना में मृत्यु होने पर परिवार को ₹25 लाख की बीमा राशि। दावों का निपटारा सरल और समयबद्ध हो।

4. प्रत्येक 300 किलोमीटर पर सुरक्षित ड्राइवर विश्रामगृह

राष्ट्रीय राजमार्गों एवं प्रमुख मार्गों पर लगभग प्रत्येक 300 किमी पर विश्रामगृह। सुरक्षित पार्किंग, आराम हेतु बिस्तर, स्वच्छ शौचालय, स्नानघर, पेयजल, भोजन, बाल कटवाने एवं दाढ़ी बनाने की सुविधा, प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा।

5. ड्राइवर एवं परिवार के लिए ₹15 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा

ड्राइवर, उसकी पत्नी और 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए पारिवारिक स्वास्थ्य बीमा योजना। गंभीर बीमारी, ऑपरेशन एवं अस्पताल में भर्ती पर देशभर के सूचीबद्ध अस्पतालों में कैशलेस/प्रतिपूर्ति सुविधा।

6. बच्चों के लिए छात्रवृत्ति एवं 10 लाख तक ब्याज-मुक्त शिक्षा ऋण

ड्राइवरों के बच्चों की विद्यालय से उच्च शिक्षा तक छात्रवृत्ति। उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए 10 लाख तक का ब्याज-मुक्त शिक्षा ऋण। पुनर्भुगतान अवधि सात वर्ष। आर्थिक अभाव के कारण किसी पात्र ड्राइवर के बच्चे की पढ़ाई बाधित न हो।

7. बेटियों के विवाह एवं उच्च शिक्षा के लिए सहायता

पात्र ड्राइवर परिवारों की बेटियों के विवाह हेतु ₹3 लाख का अनुदान। उच्च शिक्षा के लिए ₹2 लाख तक की सहायता। सरल आवेदन प्रक्रिया एवं समय पर राशि का पारदर्शी वितरण व्यवस्था।

8. ओवरलोडिंग के लिए मोटर मालिक, ट्रांसपोर्टर एवं कंपनी की जवाबदेही

ओवरलोडिंग में केवल ड्राइवर को जिम्मेदार ठहराने की प्रथा समाप्त हो। मोटर मालिक, ट्रांसपोर्टर, माल लोड करने वाली कंपनी आदि की भूमिका की निष्पक्ष जांच। नियमावली प्रमाणित होने पर कार्रवाई। संयुक्त जिम्मेदारी हेतु नए कानूनों एवं दायित्व के निर्धारण को सुदृढ़ रूप से लागू किया जाए।

9. लोडिंग एवं अनलोडिंग का खर्च संबंधित जिम्मेदार पक्ष वहन करे

माल की लोडिंग एवं अनलोडिंग का खर्च संबंधित कंपनी/माल भेजने वाले/माल मंगाने वाले पक्ष द्वारा वहन किया जाए। ड्राइवर, मोटर मालिक या ट्रांसपोर्टर पर बिना पूर्व सहमति अतिरिक्त खर्च न थोपा जाए। निर्धारित समय से अधिक प्रतीक्षा पर डिटेंशन चार्ज देने की प्रभावी व्यवस्था।

10. राष्ट्रीय ड्राइवर दिवस की स्थापना

भारत सरकार द्वारा "राष्ट्रीय ड्राइवर दिवस" की एक निश्चित तिथि घोषित कर आधिकारिक मान्यता दी जाए। देशभर में ड्राइवर सम्मान समारोह, स्वास्थ्य शिविर, सड़क सुरक्षा कार्यक्रम एवं ड्राइवर कल्याण योजनाओं का आयोजन हो।

अतिरिक्त मांग: ऊपरोक्त दसों मांगें देशभर के समस्त पात्र कमर्शियल एवं हेवी मोटर वाहन चालकों पर लागू करने की मांग — चाहे ड्राइवर किसी कंपनी, मालिक, निजी प्रतिष्ठान, औद्योगिक कंपनी या अन्य श्रेणी के हो। वाहन चालकों के वेतन, सुरक्षा, स्वास्थ्य, आवास, रक्षा, रोजगार की प्रकृति अथवा कार्यस्थान के आधार पर कोई भेदभाव न किया जाए। केंद्र सरकार आवश्यक कानून, नियम, बजट एवं योजना निर्धारित करे।

विश्लेषण: क्यों है यह आंदोलन महत्वपूर्ण? भारत की अर्थव्यवस्था के पहिए ड्राइवरों के हाथों में हैं। खाद्यान्न से लेकर दवाओं तक, हर वस्तु ड्राइवरों के माध्यम से पहुंचती है, फिर भी उनका सम्मान, सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा आज तक अधूरी है। स्टेयरिंग छोड़ो आंदोलन केवल हड़ताल नहीं है, यह सारथी समाज की गरिमा, उनके परिवार की शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य की लड़ाई है।

संपादकीय अपील: आइए, हम सब सारथी समाज की आवाज़ बनें। हम सब एक हैं। शांतिपूर्ण, अनुशासित और एकजुट रहकर अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाएं — मिशन 12 नवंबर 2026, स्टेयरिंग छोड़ो आंदोलन।

उत्तम नगर में बंगाली समुदाय का भव्य दुर्गा पूजा उत्सव: भक्ति, संस्कृति और सामाजिक सौहार्द की अनुपम झलक

माँ दुर्गा की आराधना में उमड़ा जनसैलाब, अष्टमी पर विशेष पूजन में गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति

रिपोर्ट नवदीप सिंह विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र





- **आयोजन स्थल:** मन्साराम पार्क, उत्तम नगर, पश्चिमी दिल्ली
- आयोजक: बंगाली समुदाय,
- नेतृत्व श्रीमती पिंकी कुंडू (सह-संयोजक, भाजपा बंगाली प्रकोष्ठ, दिल्ली प्रदेश), मोलॉय डे, जयंत डे, सुमित घोष
- **विशेष अवसर:** दुर्गा अष्टमी पर महा-आरती और विशेष आराधना
- **मुख्य आकर्षण:** भव्य पांडाल, माँ दुर्गा की विशाल प्रतिमा, झांकियाँ और सांस्कृतिक सजावट
- उपस्थिति: श्रद्धालुओं का विशाल जनसैलाब

1. भक्ति का महाकुंभ बना मन्साराम पार्क पूजा पांडाल में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिली। लोगों ने माता दुर्गा के दर्शन किए, पुष्पांजलि अर्पित की और परिवार की सुख-समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त किया। पूरे क्षेत्र में भक्ति और उत्साह का वातावरण छाया रहा।

2. बंगाली परंपरा का जीवंत रूप बंगाली समुदाय की दुर्गा पूजा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत है। पांडाल की सजावट, माँ की प्रतिमा का श्रृंगार, ढाक की गूंज और सिंदूर खेला की परंपरा ने इस आयोजन को दर्शनीय बना दिया।

3. दुर्गा अष्टमी पर विशेष पूजन अष्टमी के पावन अवसर पर माँ शक्ति की विशेष आरती और आराधना की गई। इस अवसर पर क्षेत्रवासियों ने सामूहिक रूप से माता की आराधना कर सामाजिक सौहार्द और एकता की कामना की।

4. गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति अष्टमी पूजन में कई प्रमुख हस्तियों ने भाग लिया:

- श्री संजय कुमार बाठला — संपादक, दैनिक 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र
- श्री के.के. छावड़ा — राष्ट्रीय कार्यकारिणी प्रमुख 'परिवहन विशेष'
- श्री विरेन्द्र कुमार चतुर्वेदी — वरिष्ठ पत्रकार
- श्री फिरोज खान — सामाजिक कार्यकर्ता
- श्री नवदीप सिंह — सामाजिक कार्यकर्ता
- श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता - सामाजिक कार्यकर्ता
- जिशांत गुप्ता

सभी उपस्थित अतिथियों ने माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना कर क्षेत्रवासियों की सुख-समृद्धि की कामना की।

विश्लेषण: क्यों है यह आयोजन औरों से खास?

सांस्कृतिक एकता का प्रतीक: पश्चिमी दिल्ली के इस आयोजन जिसका नेतृत्व पिंकी कुंडू सह संयोजक बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश द्वारा किया जा रहा है ने यह साबित कर दिखाया कि बंगाली समुदाय की पूजा अब केवल एक समुदाय तक सीमित नहीं है। यह सर्व समाज के लिए भक्ति, संस्कृति और एकता का मंच बन चुकी है।

सामाजिक सौहार्द की मिसाल: हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई — सभी धर्मों के लोगों ने इस आयोजन में भाग लेकर सामाजिक सौहार्द की मिसाल पेश की। श्रीमती पिंकी कुंडू जी के नेतृत्व में आयोजित यह उत्सव क्षेत्र में भाईचारे को मजबूत करने वाला सिद्ध हुआ।

भक्ति और कला का संगम: माँ दुर्गा की भव्य प्रतिमा, पांडाल की कलात्मक सजावट और झांकियों ने भक्तों को दर्शन के साथ-साथ बंगाल की कला और संस्कृति से भी रूबरू कराया।

निष्कर्ष: मन्साराम पार्क की यह दुर्गा पूजा न केवल एक धार्मिक उत्सव थी, बल्कि एक सामाजिक संदेश भी थी — भक्ति में शक्ति है - संस्कृति में एकता है और सौहार्द में समाज की प्रगति है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

"ऑनलाइन भेजे गए किसी भी APK पर कभी भरोसा न करें — ठग इसी भरोसे पर हमला करते हैं।"



पिंकी कुंडू

"ऑनलाइन भेजे गए किसी भी APK पर कभी भरोसा न करें — ठग इसी भरोसे पर हमला करते हैं।"

"Unknown APK = Known Danger."

मुंबई पुलिस ने 1,805 मालिशियस APK बनाने वाले डेवलपर को किया गिरफ्तार; ₹150 करोड़ साइबर फ्रॉड से जुड़ा मामला उजागर

मुंबई पुलिस क्राइम ब्रांच ने इंदौर के 36 वर्षीय डेवलपर को गिरफ्तार किया है, जिस पर आरोप है कि उसने 1,805 मालिशियस एंड्रॉयड APK तैयार किए और उन्हें देशभर के संगठित साइबर अपराध नेटवर्क को सप्लाई किया। ये फर्जी ऐप्स—सरकारी, बैंकिंग, पेंशन, सीनियर सिटिजन, ट्रैफिक चालान और PM Kisan सेवाओं के नाम पर—लोगों की संवेदनशील वित्तीय जानकारी चुराने के लिए बनाए गए थे। पुलिस के अनुसार, इस नेटवर्क ने देशभर में 9,673 लोगों को निशाना बनाया और संभावित धोखाधड़ी का आंकड़ा ₹150 करोड़ तक पहुँच सकता है। जांचकर्ताओं का कहना है कि इन APKs ने मोबाइल फोन में अनधिकृत पहुंच देकर डेबिट कार्ड विवरण, OTP और बैंकिंग क्रेडेंशियल्स चोरी किए। ये आंकड़े पुलिस विश्लेषण पर आधारित हैं; आरोपों की जांच जारी है।

मामले के प्रमुख तथ्य

- आरोपी: पंकज अवधेश गुप्ता, 36 वर्ष, इंदौर (मध्य प्रदेश)
- भूमिका: साइबर अपराध गिरोहों के लिए मालिशियस APK बनाने वाला डेवलपर
- पीड़ितों पर प्रभाव:
  - 9,673 पीड़ितों की पहचान
  - ₹150 करोड़ संभावित धोखाधड़ी
  - हेल्पलाइन 1930 पर 1,074 शिकायतें लिंक, जिनमें 143 महाराष्ट्र और 36 मुंबई से
- ट्रिगर केस: मुंबई के बायकला निवासी 72 वर्षीय व्यक्ति ने ₹5.62 लाख गंवाए जब उन्होंने WhatsApp पर भेजा गया फर्जी "Senior Citizen Card Verification.apk" इंस्टॉल किया, जिसे एक ठग ने बैंक ऑफ इंडिया अधिकारी बनकर भेजा था।

कैसे बनाया गया था यह फर्जी APK (तकनीकी पैटर्न)

डेवलपर ने एक साधारण एंड्रॉयड ऐप टेम्पलेट से शुरुआत की:

- नकली लॉगिन स्क्रीन
- व्यक्तिगत जानकारी मांगने वाला फॉर्म
- "Verify", "Update", "Download Card" जैसे बटन

यह टेम्पलेट सैकड़ों फर्जी ऐप्स में दोहराया गया। पुलिस ने पाया कि आरोपी ने ऐप इंटरफेस को असली दिखाने के लिए ग्राफिक डिजाइन का उपयोग किया, जैसे:

- बैंक ऑफ इंडिया
- सरकारी पोर्टल
- सीनियर सिटिजन योजनाएँ
- पेंशन वेरिफिकेशन
- PM Kisan
- ट्रैफिक चालान पोर्टल

इस वजह से पीड़ितों को ऐप असली लगा।

फ्रॉड कैसे किया गया

मालिशियस APKs को इस तरह डिजाइन किया गया था कि वे:

- व्यक्तिगत डेटा, कार्ड विवरण, OTP और बैंकिंग क्रेडेंशियल्स चुरा सकें
- सरकारी और बैंकिंग ऐप्स की तरह दिखें
- बिहार और झारखंड के साइबर गिरोहों को पीड़ितों के खातों से पैसे निकालने में मदद करें



ठगों ने पीड़ितों से संपर्क किया:

- WhatsApp संदेशों से
- फर्जी बैंक/सरकारी कॉल्स से
- Google Play Store के बाहर भेजे गए लिंक से

पीड़ितों को APK इंस्टॉल करने के लिए बहलाया गया, जो युगयाय संवेदनशील जानकारी चुरा लेता था।

पुलिस जांच

मुंबई क्राइम ब्रांच की प्रॉपर्टी सेल ने डेवलपर को ट्रेस किया:

- मालिशियस APKs के तकनीकी विश्लेषण से
- सर्वर लॉग्स से
- फर्जी ऐप्स में छिपे डिजिटल फुटप्रिंट्स से

इंदौर स्थित आरोपी के ऑफिस से जब्त किए गए:

- CPU
- 3 हार्ड डिस्क
- पेन ड्राइव
- Wi Fi राउटर
- 3 मोबाइल फोन

पुलिस ने पाया कि आरोपी:

- सर्वर इंफ्रास्ट्रक्चर किराए पर लेता था
- साइबर गिरोहों को "मैलवेयर एज़ ए सर्विस" बेचता था
- डिजिटल फुटप्रिंट कम रखने की कोशिश करता था

यह मामला क्यों महत्वपूर्ण है

- साइबर अपराध में "डेवलपर एज़ ए सर्विस" मॉडल का उभार दिखाता है
- तैयार मालिशियस ऐप्स कई गिरोहों को सप्लाई किए जा रहे थे
- Google Play Store के बाहर साइडलोडेड APKs का खतरा बढ़ रहा है
- भारत के डिजिटल पेमेंट इकोसिस्टम की कमजोरियाँ उजागर होती हैं

जन सुरक्षा सलाह

- WhatsApp, SMS, ईमेल या अनजान लिंक से आए किसी भी APK को कभी इंस्टॉल न करें
- केवल Google Play Store / Apple App Store से ही ऐप डाउनलोड करें
- साइबर धोखाधड़ी होते ही तुरंत 1930 पर रिपोर्ट करें
- Google Play Protect चालू रखें
- अनजान ऐप्स को Accessibility या Notification Access न दें

किफायती कैंसर उपचार: भारत के लाखों लोगों के लिए एक नई आशा

डॉ. विजय गर्ग

कैंसर आज भारत के सामने मौजूद सबसे गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक है। चिकित्सा विज्ञान में हुई प्रगति ने कैंसर की कई किस्मों की पहचान और उपचार को बेहतर बनाया है। इससे रोगियों के जीवित रहने की संभावना और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। लेकिन कैंसर की दवाओं, जाँचों, शल्य चिकित्सा, कीमोथेरेपी और रेडिएशन थेरेपी का बढ़ता खर्च लाखों परिवारों के लिए एक बड़ी बाधा बना हुआ है। अनेक रोगियों को बीमारी के साथ-साथ आर्थिक कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है। इसलिए कैंसर के उपचार को किफायती बनाना एक स्वस्थ और समानतापूर्ण भारत के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

कैंसर के उपचार का खर्च उसकी किस्म, बीमारी के चरण, आवश्यक दवाओं और उपचार की अवधि पर निर्भर करता है। कुछ रोगियों को शल्य चिकित्सा के बाद कीमोथेरेपी या रेडिएशन की आवश्यकता होती है, जबकि अन्य को लक्षित उपचार, इम्यूनोथेरेपी या लंबे समय तक दवाएँ लेनी पड़ सकती हैं। ये आधुनिक उपचार कई रोगियों के लिए लाभकारी हो सकते हैं, लेकिन इनकी ऊँची कीमत सामान्य परिवारों की पहुँच से बाहर हो सकती है। कई परिवार उपचार जारी रखने के लिए कर्ज लेते हैं, संपत्ति बेचते हैं या अपनी जीवनभर की बचत खर्च कर देते हैं। कुछ लोग आर्थिक बोझ के डर से चिकित्सा प्राप्त करने में देरी भी करते हैं।

इस बोझ को कम करने का एक महत्त्वपूर्ण तरीका किफायती जेनेरिक दवाओं की उपलब्धता बढ़ाना है। जेनेरिक दवाओं में संबंधित अनुमोदित संदर्भ दवाओं के समान सक्रिय औषधीय घटक होते हैं और उन्हें निर्धारित गुणवत्ता मानकों का पालन करना होता है। जहाँ उपयुक्त जेनेरिक विकल्प उपलब्ध हों, वहाँ उपचार का खर्च काफी कम किया जा सकता है। भारत सरकार की प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना समर्पित केंद्रों के माध्यम से किफायती जेनेरिक दवाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास करती है। सरकारी अस्पतालों और जनऔषधि केंद्रों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण कैंसर दवाओं की उपलब्धता बढ़ाने से अधिक रोगियों को कम कीमत पर आवश्यक उपचार मिल सकता है।

भारत का औषधि उद्योग भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। देश ने जेनेरिक दवाओं के निर्माण तथा घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में किफायती उपचार उपलब्ध कराने की उल्लेखनीय क्षमता विकसित की है। अनुसंधान, घरेलू उत्पादन और दवा निर्माताओं के बीच प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने से आवश्यक कैंसर दवाओं की उपलब्धता बढ़ सकती है। हालाँकि, कम कीमत का अर्थ गुणवत्ता से समझौता करना नहीं होना चाहिए। दवाओं की सुरक्षा, प्रभावशीलता और एकसमान गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कठोर नियामक निगरानी तथा विश्वसनीय निर्माण प्रक्रियाएँ आवश्यक हैं।

सरकारी सहायता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। सरकारी अस्पताल, स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ और वित्तीय सहायता कार्यक्रम रोगियों पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ को कम कर सकते हैं। आयुष्मान भारत–प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना निर्धारित पात्रता और नियमों के अनुसार योग्य लाभार्थियों को योजना के अंतर्गत आने वाले अस्पताल उपचारों के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। राज्य सरकारें भी कैंसर रोगियों के लिए विभिन्न सहायता योजनाएँ चलाती हैं। इन योजनाओं की पात्रता, आवेदन प्रक्रिया और लाभों के बारे में स्पष्ट जानकारी देने से जरूरतमंद लोगों तक सहायता पहुँच सकती है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कदम ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में सरकारी अस्पतालों की कैंसर उपचार सुविधाओं को मजबूत करना है। विशेष उपचार केंद्रों तक पहुँचने के लिए रोगियों को अक्सर लंबी



दूरी तय करनी पड़ती है। इससे परिवहन, आवास और काम से अनुपस्थित रहने के कारण होने वाला आर्थिक नुकसान भी बढ़ जाता है। क्षेत्रीय कैंसर केंद्रों का विस्तार, जाँच सुविधाओं में सुधार तथा कैंसर विशेषज्ञों, नर्सों और तकनीकी कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने से इन अप्रत्यक्ष खर्चों को कम किया जा सकता है। टेलीमेडिसिन और बेहतर रेफरल प्रणालियाँ भी अनावश्यक यात्रा के बिना विशेषज्ञों की सलाह प्राप्त करने में सहायक हो सकती हैं।

कैंसर की रोकथाम और समय पर पहचान भी उपचार के कुल खर्च को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। तंबाकू का सेवन, हानिकारक मात्रा में शराब का उपयोग, कुछ संक्रमण और पर्यावरणीय कारक विभिन्न प्रकार के कैंसर का जोखिम बढ़ा सकते हैं। जन-जागरूकता, तंबाकू नियंत्रण, एचपीवी (HPV) टीकाकरण और हेपेटाइटिस-बी का टीकाकरण कुछ कैंसरों की रोकथाम में सहायता कर सकते हैं। बीमारी के चेतावनी संकेतों की जानकारी और समय पर चिकित्सकीय परामर्श से कैंसर की शुरुआती अवस्था में पहचान की संभावना बढ़ सकती है। जाँच हमेशा वैज्ञानिक प्रमाणों और उचित चिकित्सकीय सलाह के आधार पर होनी चाहिए।

वैज्ञानिक नवाचार भी नई उम्मीदें पैदा कर रहा है। शोधकर्ता लक्षित उपचार, इम्यूनोथेरेपी और अन्य आधुनिक चिकित्सा पद्धतियाँ विकसित कर रहे हैं, जिनसे चुनिंदा रोगियों को लाभ मिल सकता है। भारत को नैदानिक अनुसंधान मजबूत करने, जिम्मेदार औषधीय नवाचार को बढ़ावा देने और उपयुक्त परिस्थितियों में किफायती बायोसिमिलर दवाओं के विकास पर ध्यान देना चाहिए। पारदर्शी मूल्य निर्धारण, उचित प्रतिस्पर्धा और सरकारी अस्पतालों द्वारा विवेकपूर्ण खरीद से महँगी दवाओं तक पहुँच बेहतर हो सकती है। हालाँकि, उपचार का निर्णय केवल कीमत के आधार पर नहीं, बल्कि वैज्ञानिक प्रमाणों और रोगी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए।

कैंसर की देखभाल में रोगियों की भावनात्मक और सामाजिक कठिनाइयों को समझना भी आवश्यक है। परामर्श, पोषण संबंधी सहायता, दर्द और अन्य कष्टों को कम करने वाली उपशामक देखभाल तथा देखभाल करने वाले परिवार के सदस्यों के लिए सहयोग एक संपूर्ण उपचार व्यवस्था का हिस्सा होना चाहिए। गैर-सरकारी संगठन, धर्मार्थ ट्रस्ट और सामुदायिक समूह दवाओं, यात्रा तथा अन्य आवश्यक खर्चों को पूरा करने में असमर्थ परिवारों की सहायता कर सकते हैं। अस्पतालों को उपचार के विकल्पों, संभावित खर्चों और उपलब्ध वित्तीय सहायता के बारे में स्पष्ट जानकारी देनी चाहिए, ताकि रोगी सोच-समझकर निर्णय ले सकें।

अंततः, किफायती कैंसर उपचार केवल एक चिकित्सा संबंधी लक्ष्य नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा का प्रश्न भी है। किसी रोगी को केवल इसलिए संभावित रूप से लाभकारी उपचार छोड़ने के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए क्योंकि उसका परिवार उसका खर्च वहन नहीं कर सकता। किफायती दवाओं, मजबूत सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं, समय पर पहचान, वैज्ञानिक अनुसंधान और संवेदनशील सहायता के माध्यम से भारत ऐसे भविष्य की ओर बढ़ सकता है, जहाँ समाज के प्रत्येक वर्ग को गुणवत्तापूर्ण कैंसर उपचार उपलब्ध हो।

कैंसर के विरुद्ध वास्तविक विजय उस दिन होगी, जब चिकित्सा की प्रगति को केवल नई खोजों से नहीं, बल्कि इस बात से भी मापा जाएगा कि उन खोजों से कितने लोगों का जीवन बचा और कितने परिवारों को आर्थिक संकट में पड़ने से बचाया जा सका।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट,

काला नमक: स्वाद बढ़ाने के साथ सेहत के लिए भी उपयोगी

परिवहन विशेष | स्वास्थ्य विशेष लेख

भारतीय रसोई में काले नमक का अपना एक विशेष स्थान है। चाट, सलाद, रायता, फल, जलजीरा और कई पारंपरिक व्यंजनों में इसका उपयोग स्वाद बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसकी खास गंध और हल्का सल्फर जैसा स्वाद इसे साधारण सफेद नमक से अलग बनाता है। आयुर्वेद और पारंपरिक खानपान में भी काले नमक का उल्लेख मिलता है। हालांकि, इसके संभावित लाभों को समझने के साथ-साथ इसका सेवन सीमित मात्रा में करना भी जरूरी है।

क्या है काला नमक?

काला नमक एक प्रकार का खनिजयुक्त नमक है। भारतीय बाजार में मिलने वाला पारंपरिक काला नमक अक्सर प्रसंस्करण के दौरान गर्म किए गए नमक और अन्य खनिज पदार्थों से तैयार किया जाता है। इसमें मौजूद सल्फरयुक्त यौगिक इसकी विशिष्ट गंध और स्वाद के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसका रंग गहरा भूरा, बैंगनी या काला दिखाई दे सकता है, जबकि पीसने पर यह गुलाबी-भूरा भी नजर आ सकता है।

काले नमक की संरचना उत्पाद और निर्माण प्रक्रिया के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। इसलिए इसके सभी प्रकारों में खनिजों की मात्रा या स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव समान होना जरूरी नहीं है।

काले नमक के संभावित फायदे

****1. भोजन का स्वाद बढ़ाने में उपयोगी****

काले नमक का सबसे स्पष्ट लाभ इसका विशिष्ट स्वाद है। थोड़ी-सी मात्रा में इसे सलाद, फल, रायता या चाट में मिलाने से भोजन का स्वाद बढ़ सकता है। इससे कुछ व्यंजनों में अधिक नमक डालने की जरूरत भी कम हो सकती है, बशर्ते कुल नमक की मात्रा नियंत्रित रखी जाए।

****2. पाचन संबंधी असुविधा में संभावित भूमिका****

पारंपरिक घरेलू नुस्खों में काले नमक का उपयोग पेट फूलने और अपच जैसी शिकायतों के लिए किया जाता रहा है। कुछ लोगों को भोजन में थोड़ी मात्रा लेने से स्वाद और भोजन के अनुभव में सुधार महसूस हो सकता है। हालांकि, काला नमक गैस, कब्ज या अपच का प्रमाणित उपचार नहीं है। लगातार पेट दर्द, उल्टी या पाचन संबंधी समस्या होने पर चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

****3. कम मात्रा में भोजन को रुचिकर बनाना****

जिन लोगों को सादा सलाद या फल फीके लगते हैं, वे सीमित मात्रा में काला नमक डालकर उनका स्वाद बेहतर बना सकते हैं। स्वस्थ आहार में फल और सब्जियों को शामिल करने का यह एक आसान तरीका हो सकता है। ध्यान रहे कि नमक डालने से फल या सब्जियां अपने आप अधिक पौष्टिक नहीं हो जातीं।

****4. पारंपरिक पेय पदार्थों में उपयोग****

जलजीरा, नींबू पानी और कुछ पारंपरिक पेय पदार्थों में काले नमक का उपयोग किया जाता है। इससे पेय का स्वाद बेहतर हो सकता है। लेकिन गर्मी में शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट की कमी पूरी करने के लिए केवल काले नमक वाले पानी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। दस्त, उल्टी या गंभीर निर्जलीकरण की स्थिति में उचित ओआरएस और चिकित्सकीय सलाह अधिक महत्वपूर्ण हैं।

क्या काला नमक पाचन को बेहतर बनाता है?

काले नमक को अक्सर पाचन में सहायक बताया जाता है, लेकिन इसके लाभों के संबंध में मजबूत वैज्ञानिक प्रमाण सीमित हैं। इसे खाने से कुछ लोगों को राहत महसूस हो सकती है, पर यह दावा करना सही नहीं होगा कि काला नमक हर प्रकार की गैस, एसिडिटी या कब्ज को दूर करता है।

एसिडिटी या सीने में जलन की समस्या होने पर अतिरिक्त नमक लेने के बजाय भोजन की आदतों पर ध्यान देना और जरूरत पड़ने पर चिकित्सकीय सलाह लेना अधिक उचित है।

पुरुषों में भी हो सकता है ब्रेस्ट कैंसर, छाती में गांठ दिखे तो तुरंत कराएँ जाँच

ब्रेस्ट कैंसर सिर्फ महिलाओं को ही नहीं, पुरुषों को भी हो सकता है। पुरुषों में इसके मामले कम होते हैं, लेकिन लक्षणों को नजरअंदाज करना गंभीर पड़ सकता है। इसलिए छाती या निप्पल में कोई नया या असामान्य बदलाव दिखाई दे, तो उसे मामूली समझकर टालें नहीं।

पुरुषों में किन लक्षणों पर ध्यान देना चाहिए?

छाती या निप्पल के आसपास गांठ महसूस होना।

निप्पल का अंदर की ओर धँसना या उसके आकार में बदलाव आना।

निप्पल से खून या किसी अन्य तरह का तरल निकलना।

छाती की त्वचा पर गड्ढे पड़ना, सिकुड़न या असामान्य बदलाव दिखाई देना।

निप्पल के आसपास घाव बनना या त्वचा में लगातार बदलाव रहना।

बगल में गांठ या सूजन महसूस होना।

⚠ जरूरी चेतावनी: इन लक्षणों को नजरअंदाज न करें

छाती में हर गांठ कैंसर नहीं होती। हार्मोन में बदलाव, संक्रमण और अन्य कारणों से भी गांठ या सूजन हो सकती है। लेकिन केवल लक्षण देखकर यह तय नहीं किया जा सकता कि गांठ कैंसर की है या नहीं।

यदि छाती में नई गांठ, निप्पल से खून निकलने या त्वचा में असामान्य बदलाव जैसे लक्षण दिखाई दें, तो जल्द से जल्द डॉक्टर से जाँच कराएँ। दर्द न होने का मतलब यह नहीं है कि गांठ खतरनाक नहीं हो सकती।

यदि गांठ तेजी से बढ़ रही हो, निप्पल से खून निकल रहा हो या त्वचा पर घाव बन रहा हो, तो जाँच कराने में देरी न करें।

पुरुषों में ब्रेस्ट कैंसर का खतरा किन कारणों से बढ़ सकता है?

बढ़ती उम्र, परिवार में ब्रेस्ट कैंसर का इतिहास, BRCA1 या BRCA2 जैसे आनुवंशिक बदलाव, पहले छाती पर रेडिएशन से उपचार और कुछ हार्मोन संबंधी स्थितियाँ जोखिम बढ़ा सकती हैं। हालांकि, बिना किसी स्पष्ट जोखिम कारक के भी पुरुषों में यह बीमारी हो सकती है।

बीमारी की पुष्टि कैसे होती है?

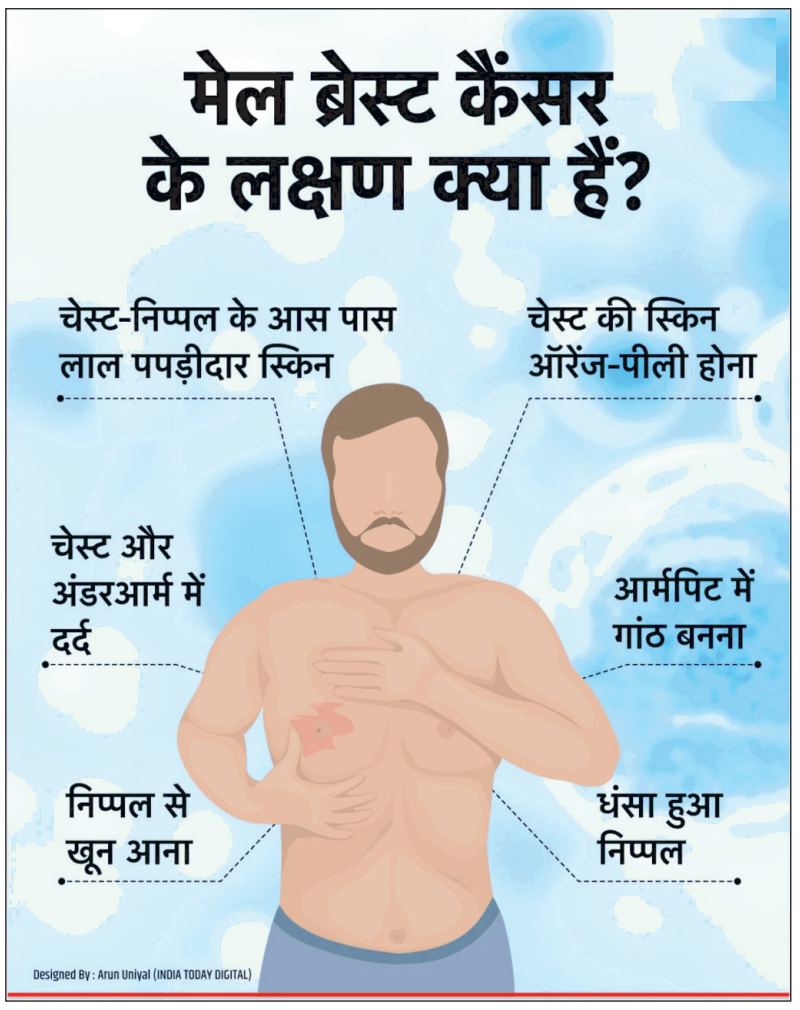
डॉक्टर पहले छाती और बगल की जाँच करते हैं। जरूरत पड़ने पर मैमोग्राफी, अल्ट्रासाउंड और बायोप्सी कराने की सलाह दी जा सकती है। बायोप्सी में ऊतक का नमूना जाँचकर कैंसर की पुष्टि की जाती है। केवल गांठ महसूस होने या इमेजिंग जाँच के आधार पर हर मामले में कैंसर की पुष्टि नहीं मानी जाती।

क्या समय पर इलाज संभव है?

हाँ। यदि ब्रेस्ट कैंसर का पता शुरुआती चरण में चल जाए, तो उपचार के बेहतर परिणाम मिलने की संभावना बढ़ सकती है। इलाज बीमारी के प्रकार और उसकी अवस्था के अनुसार तय किया जाता है।

छाती में नई गांठ या निप्पल में असामान्य बदलाव होने पर शर्म या डर के कारण डॉक्टर से मिलने में देरी न करें।

याद रखें: हर गांठ कैंसर नहीं होती,



अक्टूबर माह में स्वास्थ्य का ख्याल: बदलते मौसम में सेहत की सुरक्षा जरूरी

परिवहन विशेष | स्वास्थ्य विशेष लेख

अक्टूबर का महीना मौसम में बदलाव का संकेत लेकर आता है। सितंबर की उमस और बारिश के बाद धीरे-धीरे ठंडक बढ़ने लगती है। दिन में गर्मी और सुबह-शाम हल्की ठंड का अनुभव होने लगता है। मौसम का यह उतार-चढ़ाव शरीर की सामान्य दिनचर्या, रोग प्रतिरोधक क्षमता और स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकता है। ऐसे में अक्टूबर के महीने में अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना जरूरी है।

इस समय सर्दी-जुकाम, खांसी, गले में खराश, एलर्जी और सांस संबंधी परेशानियों की शिकायत बढ़ सकती है। जिन लोगों को अस्थमा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप या हृदय संबंधी समस्याएं हैं, उन्हें अपनी सेहत को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। बच्चों और बुजुर्गों के लिए भी बदलते मौसम के अनुरूप दिनचर्या अपनाना लाभकारी रहता है।

खानपान में रखें संतुलन

स्वस्थ रहने के लिए संतुलित और पौष्टिक भोजन सबसे महत्वपूर्ण है। अक्टूबर में मौसमी फल, हरी सब्जियां, दालें, साबुत अनाज, दूध-दही और प्रोटीन से भरपूर खाद्य पदार्थों को भोजन में शामिल करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहें। मौसम ठंडा होने पर प्यास कम लग सकती है, लेकिन शरीर को पानी की आवश्यकता बनी रहती है।

बहुत अधिक तला-भुना, अत्यधिक मीठा और नमकयुक्त भोजन सीमित करें। बाहर खुले में रखे खाद्य पदार्थों और अस्वच्छ पानी से बचें। भोजन करने से पहले हाथ धोने और रसोई की स्वच्छता बनाए रखने की आदत अपनाएं।

सुबह की सैर और व्यायाम जरूरी

अक्टूबर का मौसम सुबह की सैर, योग और हल्के व्यायाम के लिए अनुकूल हो सकता है। नियमित शारीरिक गतिविधि शरीर को सक्रिय रखने, तनाव कम करने और अच्छी नींद में मदद करती है। हालांकि, बहुत सुबह ठंड अधिक हो या वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ा हुआ हो, तो बाहर व्यायाम करने का समय बदलें अथवा घर के भीतर व्यायाम करें।

दिल्ली-एनसीआर जैसे क्षेत्रों में अक्टूबर के दौरान वायु गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। धूल, धुआं और प्रदूषण सांस संबंधी समस्याओं को बढ़ा सकते हैं। बाहर निकलने से पहले वायु गुणवत्ता की जानकारी लें और प्रदूषण अधिक होने पर खुले में लंबे समय तक व्यायाम करने से बचें। सांस लेने में परेशानी होने पर चिकित्सकीय सलाह लें।

सुबह-शाम के तापमान से बचाव

दिन और रात के तापमान में अंतर होने के कारण कपड़ों का चुनाव सोच-समझकर करें। सुबह और शाम हल्की जैकेट या अतिरिक्त कपड़ा साथ रखना उपयोगी हो सकता है। पसीने से भीगे कपड़ों में अधिक देर तक न रहें और बच्चों को मौसम के अनुसार कपड़े पहनाएं।

बदलते मौसम में ठंड लगने से बचाव के साथ-साथ कमरे में पर्याप्त हवा का आवागमन भी जरूरी है। बंद कमरे में धुआं उत्पन्न करने वाले उपकरणों का असुरक्षित उपयोग न करें।

नींद और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान

अच्छी सेहत के लिए पर्याप्त नींद, नियमित दिनचर्या और मानसिक शांति आवश्यक हैं। देर रात तक जागना, लगातार मोबाइल या स्क्रीन का उपयोग करना और अनियमित भोजन स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। सोने और जागने का समय नियमित रखें।

तनाव कम करने के लिए योग, ध्यान, प्राणायाम, संगीत, पढ़ने या परिवार के साथ समय बिताने जैसी गतिविधियां अपनाई जा सकती हैं। अपनी मानसिक परेशानी लंबे समय तक बनी रहने पर विशेषज्ञ से सलाह लेने में संकोच न करें।

बच्चों और बुजुर्गों की विशेष देखभाल

बच्चों को हाथ धोने, खांसते या छींकते समय मुंह ढकने और व्यक्तिगत स्वच्छता की आदत सिखाएं। स्कूल या सार्वजनिक स्थानों पर बीमार होने पर दूसरों में संक्रमण फैलने से बचने के लिए उचित सावधानी बरतें।

बुजुर्गों को नियमित भोजन, पर्याप्त पानी, सुरक्षित शारीरिक गतिविधि और पर्याप्त आराम पर ध्यान देना चाहिए। यदि वे पहले से किसी बीमारी की दवा ले रहे हैं, तो दवाएं चिकित्सक के निर्देशानुसार लेते रहें। अपनी मर्जी से दवा बंद करना या उसकी मात्रा बदलना उचित नहीं है।

त्योहारों के मौसम में रखें सावधानी

अक्टूबर में कई बार त्योहारों और सामाजिक आयोजनों की शुरुआत होती है। इस दौरान मिठाइयों और तले-भुने खाद्य पदार्थों का सेवन बढ़ जाता है। स्वाद के साथ स्वास्थ्य का संतुलन बनाए रखें। मधुमेह, उच्च रक्तचाप या अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे लोग अपने चिकित्सक द्वारा बताए गए खानपान संबंधी निर्देशों का पालन करें।

पटाखों, धुएं और धूल से दूर रहने का प्रयास करें, विशेषकर तब जब किसी व्यक्ति को अस्थमा या एलर्जी की समस्या हो। त्योहारों के दौरान स्वच्छता, सुरक्षित भोजन और पर्याप्त आराम को नजरअंदाज न करें।

टीकाकरण और चिकित्सकीय सलाह

मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए व्यक्तिगत स्वास्थ्य के अनुसार आवश्यक टीकाकरण के बारे में चिकित्सक से परामर्श लें। विशेष रूप से बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं, छोटे बच्चों और पुरानी बीमारियों से प्रभावित व्यक्तियों को अपनी जरूरत के अनुसार सलाह लेनी चाहिए।

यदि तेज बुखार, सांस लेने में कठिनाई, सीने में दर्द, अत्यधिक कमजोरी या लगातार बिगड़ते लक्षण दिखाई दें, तो समय पर चिकित्सा सहायता लें। केवल घरेलू उपचार पर निर्भर रहकर गंभीर लक्षणों को नजरअंदाज न करें।

निष्कर्ष

अक्टूबर का महीना मौसम में बदलाव के साथ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का संदेश देता है। संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, स्वच्छता, प्रदूषण से बचाव और समय पर चिकित्सकीय सलाह अपनाकर मौसमी परेशानियों के जोखिम को कम किया जा सकता है।

स्वास्थ्य की सुरक्षा केवल बीमारी होने पर उपचार कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि रोजमर्रा की अच्छी आदतों से भी जुड़ी है। आइए, इस अक्टूबर में हम स्वयं के साथ-साथ अपने परिवार, बच्चों और बुजुर्गों की सेहत का ध्यान रखें और स्वस्थ जीवनशैली को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।

दुनिया का 13वाँ ज्योतिर्लिंग - ऑस्ट्रेलिया में! जानिए और जरूर भेंट दीजिए

मुक्ति गुप्तेश्वर महादेव मंदिर, मिंटो, सिडनी – दुनिया का एकमात्र भूमिगत गुफा मंदिर, जहाँ 20 लाख ॐ नमः शिवाय के मंत्र एक तहखाने में सुरक्षित हैं

ॐ नमः शिवाय — हर हर महादेव

मुख्य तथ्य

- मंदिर: मुक्ति गुप्तेश्वर महादेव मंदिर

- स्थानः 203 Eagleview Road, मिंटो, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

- दावाः भक्तों द्वारा माना जाने वाला 13वाँ ज्योतिर्लिंग

- विशेषताः दुनिया का पहला और एकमात्र मानव निर्मित भूमिगत गुफा मंदिर

- निर्माण शुरूः सितंबर 1997

- प्राण प्रतिष्ठाः 14 फरवरी 1999, महाशिवरात्रि

- मुख्य शिवलिंग दाताः नेपाल के तत्कालीन राजा वीरेंद्र वीर विक्रम शाहदेव

मुख्य बिंदु

1. 12 ज्योतिर्लिंगों का ज्ञान तो सबको है, पर 13वाँ कहाँ है? शास्त्रों में 12 ज्योतिर्लिंग बताए गए हैं। पर ऑस्ट्रेलिया के मिंटो में स्थित यह मंदिर भक्तों में 13वें ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजित है। यह आधिकारिक शास्त्रीय सूची का हिस्सा नहीं है, बल्कि इस मंदिर की मान्यता और भक्ति-परंपरा से इसे यह नाम मिला है।

2. दुनिया का एकमात्र भूमिगत गुफा मंदिर यह मंदिर पूरी तरह ज़मीन के नीचे एक गुफा के अंदर बनाया गया है। प्रारंभिक पूजा प्राकृतिक गुफाओं में ही होती थी, इसलिए भूमिगत होने से भक्त धरती माँ के गर्भ के निकट महसूस करते हैं। गुफा में पिनड्रॉप शांति है, जो ध्यान के लिए सर्वोत्तम है।

3. मुख्य शिवलिंग कोई आम शिवलिंग नहीं है इस मंदिर के मुख्य शिवलिंग को नेपाल के राजा वीरेंद्र वीर विक्रम शाहदेव ने ऑस्ट्रेलिया के हिंदू समाज को उपहार में दिया था। राजा ने शिवलिंग के साथ भगवान शिव की स्तुति के लिए 8 खंडों में लिखे गए 7,996 मंत्र भी भेंट किए थे, जो 'मुक्ति गुप्तेश्वर शिवधर्म महाशास्त्र' के रूप में जाने जाते हैं।

4. 2014 में आई वाराणसी की विशाल मूर्ति वाराणसी से मंगवाई गई 4.5 मीटर ऊँची, एक ही मार्बल से बनी शिवजी की भव्य मूर्ति भी यहाँ स्थापित की गई।

तीन रहस्य जो इसे अनोखा बनाते हैं



रहस्य 1: गुफा में कुल 1128 छोटे मंदिर मंदिर के अंदर 12 ज्योतिर्लिंगों की हूबहू प्रतिकृति है, यहाँ 108 शिवलिंग हैं जो शिव के रुद्र अवतारों के हैं, और 1008 आकृतियां जो शिव के सहस्त्र नामों को दर्शाती हैं।

रहस्य 2: गर्भगृह के ठीक नीचे 10 मीटर गहरा तहखाना इस तहखाने में दुनिया भर के शिव भक्तों द्वारा हाथ से लिखे गए 20 लाख से ज्यादा ॐ नमः शिवाय के पर्चे सुरक्षित रखे गए हैं।

रहस्य 3: 88 अष्टधातु की मटकियों में भारत की 81 पवित्र नदियों का जल भारत की 81 पवित्र नदियों, ऑस्ट्रेलिया की नदियों और दुनिया के 5 महासागरों का जल लाकर रखा गया है। हर पूजा में इसी जल से अभिषेक होता है।

ज़मीन के नीचे क्यों बनाया गया? — विज्ञान भी है

- ऑस्ट्रेलिया के चुम्बकीय क्षेत्र का केंद्र इस क्षेत्र में है

- भूमिगत गुफा ध्यान के लिए सबसे उत्तम जगह है — बाहर का कोई शोर अंदर नहीं आता

- गुफा का तापमान हमेशा एक जैसा रहता है — न ज़्यादा गर्मी, न ज़्यादा ठंड

- पर्यावरण के लिए भी अच्छा है

- ऑस्ट्रेलिया में अक्सर जंगलों में आग (Bush Fire) लगती है, पर यह भूमिगत मंदिर उस आग से भी पूरी तरह सुरक्षित है

- सबसे सुंदर बात — हर शाम 7 बजे जो आरती होती है, उस आरती की आवाज़ भजन सम्राट अनूप जलोटा जी ने खुद इस मंदिर के लिए रिकॉर्ड की है

विश्लेषण: भक्ति की कोई सीमा नहीं यह मंदिर बताता है कि भक्ति किसी देश, किसी सीमा से नहीं बंधी है। हज़ारों मील दूर ऑस्ट्रेलिया में भी शिवभक्ति उसी भाव से है जैसी भारत में। यह मंदिर हिंदू संस्कृति का एक वैश्विक प्रतीक बन चुका है।

निष्कर्ष: अगर आप कभी सिडनी जाएँ तो मिंटो में इस मंदिर के दर्शन ज़रूर करें।

ॐ नमः शिवाय



धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

20 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 4 — व्यवस्था, अनुशासन, स्थिरता, व्यावहारिकता और निरंतर प्रगति

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 4 आपकी नेतृत्व ऊर्जा को व्यवस्थित और अनुशासित बनाता है। तेजी से विस्तार करने से पहले सिस्टम बनाएं, धन व्यवस्थित करें और जरूरी आधार मजबूत करें।
रिश्ते: आप जल्दी सहमति चाह सकते हैं, जबकि आज धैर्य जरूरी है। साथी या परिवार के साथ साझा दिनचर्या और जिम्मेदारियों का सम्मान करें।
सावधानी: अधीरता, जिद्दी अधिकार और धीमी प्रक्रिया को तेज करने के लिए अनावश्यक खर्च से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक बड़े लक्ष्य को स्पष्ट छोटे चरणों में बांटें।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 4 आपकी संवेदनशील प्रकृति को व्यावहारिक आधार देता है। केवल अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहने के बजाय बिल, समझौते या संयुक्त धन के विवरण ध्यान से जांचें।
रिश्ते: आज बार-बार भावनात्मक आश्वासन से अधिक स्थिरता महत्वपूर्ण है। छोटे लेकिन भरोसेमंद काम विश्वास मजबूत करेंगे।
सावधानी: असुरक्षा, काम टालने और हर व्यावहारिक निर्णय दूसरे पर छोड़ने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक सरल दिनचर्या बनाएं जो आर्थिक या भावनात्मक स्थिरता बढ़ाए।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 4 आपकी रचनात्मक ऊर्जा में अनुशासन लाता है। अच्छा विचार तब मूल्यवान बनेगा जब उसे संरचना, समयसीमा और व्यावहारिक बजट मिलेगा।
रिश्ते: आपकी हल्की-फुल्की प्रकृति के सामने आज गंभीर माहौल हो सकता है। गर्मजोशी रखें, लेकिन वादे और जिम्मेदारियां भी निभाएं।
सावधानी: बिखरे फोकस, मनोरंजन पर अनावश्यक खर्च और महत्वपूर्ण काम अधूरा छोड़ने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: नया शुरू करने से पहले एक रचनात्मक काम पूरा करें।

मूलांक 4

धन व करियर: आपके मूलांक 4 और दिन के अंक 4 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। व्यवस्था, अनुशासन, व्यावहारिकता और लंबी अवधि की योजना के लिए अच्छा दिन है; जरूरत के अनुसार लचीलापन भी रखें।
रिश्ते: आज आपकी विश्वसनीयता बड़ी ताकत है। लेकिन नियम और दिनचर्या रिश्ते को सहारा दें, नियंत्रण का अनुभव न कराएं।
सावधानी: कठोरता, निराशावाद, अधिक आलोचना और उचित बदलाव का विरोध करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक मजबूत आधार बनाएं और एक उपयोगी बदलाव स्वीकार करें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 4 आपकी तेज ऊर्जा को धीमा करके निरंतरता पर ध्यान देता है। दिशा बदलने या नए अवसर के पीछे जाने से पहले कॉन्ट्रैक्ट, समय और खर्च की समीक्षा करें।
रिश्ते: स्वतंत्रता और दिनचर्या में टकराव महसूस हो सकता है। योजनाएं स्पष्ट बताने से व्यावहारिक विषय भावनात्मक समस्या बनने से बच सकता है।
सावधानी: अचानक खरीदारी, वादा भूलने और आखिरी समय में योजना बदलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: नए रोमांच से पहले एक लंबित जिम्मेदारी पूरी करें।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 4 घर, परिवार और काम में व्यावहारिक सुरक्षा को समर्थन देता है। नियमित खर्च देखें और ऐसी योजना बनाएं जो आराम भी बनाए रखे और बचत भी सुरक्षित करे।
रिश्ते: आज प्यार भरोसेमंद कामों से सबसे अच्छी तरह दिखेगा। वादे निभाएं, लेकिन दूसरे व्यक्ति के जीवन की हर जिम्मेदारी स्वयं न लें।
सावधानी: अधिक जिम्मेदारी, पूर्णता की जिद और सबको आराम देने के लिए जरूरत से ज्यादा खर्च से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक व्यावहारिक देखभाल के काम से स्थिरता बनाएं।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 4 आपकी विश्लेषणात्मक सोच को ठोस रूप देता है। शोध उपयोगी है, लेकिन आज समझ को व्यावहारिक सिस्टम, समय-सारणी या आर्थिक योजना में बदलना बेहतर रहेगा।
रिश्ते: जिम्मेदारियां भारी लगने पर आप सोच में पीछे हट सकते हैं। भावनात्मक रूप से अनुपस्थित होने के बजाय अपनी जरूरत स्पष्ट बताएं।
सावधानी: अत्यधिक विश्लेषण, अलगाव और पूर्ण निश्चितता के इंतजार में व्यावहारिक कदम टालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक अच्छी तरह जांचे विचार को सरल कार्यशील व्यवस्था में बदलें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 4 आपकी अनुशासित महत्वाकांक्षा के साथ अच्छा मेल खाता है। तुरंत लाभ के बजाय सिस्टम, अनुपालन, बजट और लंबी अवधि की संपत्ति पर ध्यान दें; निरंतर प्रयास अधिकार मजबूत कर सकता है।
रिश्ते: जिम्मेदारियां आपका अधिक ध्यान ले सकती हैं। दक्षता और नियंत्रण को गर्मजोशी या साझा निर्णय का विकल्प न बनने दें।
सावधानी: काम में अत्यधिक डूबने, कठोर अपेक्षाएं और धन को प्रतिबद्धता का माप बनाने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक लंबी अवधि की प्राथमिकता सुरक्षित करें और एक व्यक्तिगत रिश्ते के लिए समय निकालें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 4 आपकी उदार और जोशीली ऊर्जा को व्यावहारिक आधार देता है। लंबित जिम्मेदारियां पूरी करें, संसाधन व्यवस्थित करें और समय व धन कहां जा रहा है इसकी स्पष्ट सीमा बनाएं।
रिश्ते: आप दूसरों की हर समस्या हल करना चाह सकते हैं। व्यावहारिक सहयोग दें, लेकिन अपनों को अपनी जिम्मेदारी स्वयं उठाने दें।
सावधानी: हर किसी को बचाने की कोशिश, अपराधबोध में खर्च और दूसरों का बोझ अपने ऊपर लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक अधूरा विषय व्यवस्थित करें और एक अनावश्यक जिम्मेदारी छोड़ें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

लोकमंगल का मर्यादा पर्व विजयदशमी

डॉ घनश्याम बादल

दशहरा आते ही रावण के पुतले खड़े होने लगते हैं। गांव गांव शहर में मेले ठेले लगते हैं और राम की विजय का जश्न मनाने के साथ-साथ रावण के पुतले जलाकर हम खुश होते हैं कि आज एक बार फिर रावण का अंत हमने कर दिया है। हर साल बढ़ती हुई भीड़ और रावण की बढ़ती हुई ऊंचाई एक नया ही प्रश्न खड़ा करती है। कागज़, बाँस और बारूद से बना दस सिरों वाला रावण शाम होते-होते आग के हवाले कर दिया जाता है। आतिशबाजी होती है, तालियाँ बजती हैं और लोग घर लौट जाते हैं मगर अगले दिन वही झूठ, अहंकार, छल, स्त्री का अपमान, सत्ता का दुरुपयोग और दूसरे को नीचा दिखाने की होड़ फिर अपनी जगह खड़ी मिलती है। सवाल है कि हर साल जलने वाला रावण आखिर हमारे असली जीवन में मरता क्यों नहीं? क्या हमने बुराई के पुतले जलाने की परंपरा तो बचा ली, लेकिन बुराई को पहचानने और उससे लड़ने का साहस खो दिया? दशहरे का असली सवाल शायद यही है।

विजयदशमी के मायने

भारतीय परंपरा में विजयादशमी केवल एक त्योहार मात्र नहीं, विजय के विवेक की कसौटी है। यह बताती है कि शक्ति का अर्थ किसी को दबाना नहीं, अन्याय का प्रतिरोध करना है; ज्ञान का अर्थ दूसरों पर रोब जमाना नहीं, अपने अहंकार पर अंकुश लगाना है और विजय का अर्थ केवल शत्रु को परास्त करना नहीं, स्वयं की कमजोरियों पर भी जीत हासिल करना है।

राम की विजय और रावण

रामायण की कथा में भगवान राम और रावण का युद्ध धर्म और अधर्म के संघर्ष का प्रतीक बनकर सामने आता है। एक ओर मर्यादा, कर्तव्य, धैर्य और लोकमंगल का आदर्श है, तो दूसरी ओर असाधारण विद्वत्ता और सामर्थ्य के बावजूद अहंकार से अंधा हो चुका शासक। रावण कोई साधारण प्रतिद्वंद्वी नहीं था। वह प्रकांड विद्वान, शिवभक्त, कुशल योद्धा और शक्तिशाली लंकापति था लेकिन उसकी उपलब्धियाँ उसके विवेक को नहीं बचा सकीं। सीता का हरण केवल एक स्त्री का अपहरण नहीं, दूसरे की स्वतंत्रता और गरिमा को अपनी इच्छा के अधीन कर लेने की मानसिकता का प्रतीक भी है। यही रावण की सबसे बड़ी पराजय थी। वह राम के हाथों युद्ध में बाद में हारा, अपने अहंकार के हाथों पहले ही हार चुका था।

विजयदशमी की प्रासंगिकता

रामकथा के अलग-अलग रूपों में घटनाओं और चरित्रों की व्याख्या के अनेक स्वर मिलते हैं। कहीं राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, कहीं कथा भक्ति का आधार बनती है और कहीं रावण के चरित्र के माध्यम से सत्ता, विद्वत्ता तथा नैतिकता के संबंध पर विचार किया जाता है। पर एक बात स्पष्ट है— प्रतिभा अपने आप में चरित्र का प्रमाणपत्र नहीं होती। ज्ञान के साथ विवेक न हो, तो वही ज्ञान विनाश का औजार बन सकता है।

दशहरे की कथा का यह पक्ष आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि आधुनिक समाज में भी पद, पैसा, प्रतिष्ठा और तकनीकी सामर्थ्य को सफलता का पर्याय मान लेने की प्रवृत्ति बढ़ी है। हम यह पूछना भूल जाते हैं कि सफलता किस कीमत पर हासिल हुई और उसका लाभ किसे मिला।

एक पर्व, अनेक संदर्भ

दशहरे का महत्व केवल राम और रावण के युद्ध तक सीमित नहीं है। भारतीय धार्मिक परंपराओं में यह दिन देवी दुर्गा की महिषासुर पर विजय से भी जुड़ा है। यहाँ विजय का रूप बदल जाता है— शक्ति अन्याय और आसुरी प्रवृत्तियों का प्रतिरोध करती है। राम की कथा मर्यादा और कर्तव्य का स्मरण कराती है, तो दुर्गा की कथा बताती है कि जब संकट व्यापक हो, तब संगठित शक्ति और साहस की आवश्यकता होती है।

आध्यात्मिक पक्ष

आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो रावण के दस सिर मनुष्य के भीतर पलने वाली अनेक विकृतियों की याद दिला सकते हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, ईर्ष्या, छल और विवेकहीनता। यह प्रतीकात्मक व्याख्या है, कोई एकमात्र शास्त्रीय अर्थ नहीं। इसका संदेश इतना भर है कि बुराई केवल बाहर खड़ा कोई शत्रु नहीं होती; वह हमारे निर्णयों, व्यवहार और इच्छाओं में भी जगह बना सकती है।

आत्म परीक्षण का अवसर

इसीलिए दशहरा आत्मपरीक्षण का अवसर है। दूसरों के दोष गिनाना आसान है, अपने भीतर झाँकना कठिन। रावण का पुतला जलाते समय यदि मन में किसी के प्रति घृणा, व्यवहार में अन्याय और फैसलों में स्वार्थ सुरक्षित हैं, तो उत्सव का शोर हमारी आत्मा तक पहुँच ही नहीं पाया।

इतिहास से लोकजीवन तक

विजयादशमी की परंपरा सदियों में अनेक धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूपों में विकसित हुई है। उत्तर भारत की रामलीलाएँ, रावण-दहन, मैसूर का दशहरा, बंगाल की दुर्गापूजा के बाद विजयादशमी और महाराष्ट्र सहित कई क्षेत्रों में शस्त्रपूजा तथा आयुधपूजा की परंपराएँ इस पर्व के बहुरंगी स्वरूप को सामने लाती हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी रस्में भिन्न हैं, लेकिन विजय, शुभारंभ और सामूहिक उत्सव का भाव उन्हें जोड़ता है।

ऐतिहासिक रूप से भी शस्त्रपूजा का संबंध शक्ति, सुरक्षा और कर्तव्य से रहा है। आज उसके अर्थ का विस्तार किया जा सकता है। किसान अपने औजारों, कारीगर अपने उपकरणों, सैनिक अपने शस्त्रों और विद्यार्थी अपनी पुस्तकों के प्रति सम्मान व्यक्त करें—तो यह परंपरा कर्म की गरिमा का उत्सव बन सकती है। पूजा का अर्थ वस्तु को पवित्र मानकर रख देना नहीं, उसके उपयोग को जिम्मेदार बनाना भी है।

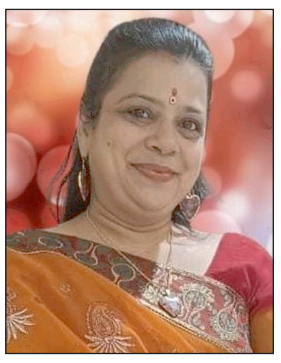
मेले ठेले, मेल मिलाप

लोकजीवन में दशहरा सामाजिक मेल-मिलाप, स्थानीय कला, रंगमंच और सामूहिक भागीदारी का अवसर भी है। रामलीलाएँ केवल धार्मिक आख्यान नहीं, संवाद, अभिनय, संगीत और लोकस्मृति की जीवित परंपराएँ हैं। उनके मंच पर पीढ़ियाँ मिलती हैं और समाज अपने नैतिक प्रश्नों को कथा के माध्यम से दोबारा देखता है। इस सांस्कृतिक विरासत को बचाना ही दशहरे के अर्थ को बचाना है।

आज विजयदशमी को मनाने का सबसे बड़ा कारण होना चाहिए बुराई के खिलाफ वीरता से भरा हुआ विनम्र, सभ्य, शालीन और मर्यादावान रामेय प्रवृत्ति का युद्ध तथा आधुनिक रावणों के ख़िलाफ़ ऐसे राम तैयार करना जो दलित, दमित, शोषित और वंचित तबके के साथ आम आदमी के हितों की रक्षा के लिए उसे अंतिम दम तक लड़ने की कूव्वत रखते हों।

डॉ घनश्याम बादल

अनूठा पर्व है दशहरा



Ms Aanchal Agarwal
Working as PRT in one of the renowned school of Delhi
Done PGDM in IT & HR, M.Com ., B.Ed.



परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

त्यौहार एवं मेले भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग है। हमारे यहां हर दिन कोई ना कोई पर्व या त्योहार होता है, उनमें न केवल भौतिक आकर्षण के पर्व है बल्कि प्रेरणा से जुड़े पर्व भी है। एक ऐसा ही अनूठा पर्व है दशहरा। भारत के लगभग सभी भागों में दशहरे का पर्व एक महा-उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसे विजयादशमी भी कहा जाता है। दशहरा बुराइयों से संघर्ष का प्रतीक है. आज भी अंधेरों से संघर्ष करने के लिये इस प्रेरक एवं प्रेरणादायी पर्व की संस्कृति को जीवंत बनाने की जरूरत है।

विजयादशमी-दशहरा आश्विन शुक्ल दशमी को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह हर साल दिपावली के पर्व से 20 दिन पहले आता है। लंका के असुर राजा रावण पर भगवान राम की जीत को दर्शाता है दशहरा। भगवान राम सच्चाई के प्रतीक है और रावण बुराई की शक्ति का। देवी दुर्गा के पूजा के साथ हिन्दू लोगों के द्वारा यह महान धार्मिक उत्सव मनाया जाता है। इस पर्व को पूरे देश में मनाने की परंपरा और प्रक्रियां अलग-अलग है।

यह भारत का 'राष्ट्रीय त्यौहार है। रामलीला में जगह-जगह रावण वध का प्रदर्शन होता है। ब्रज के मन्दिरों में इस दिन विशेष दर्शन होते हैं। इस दिन नीलकंठ का दर्शन बहुत शुभ माना जाता है। यह त्योहार - क्षत्रियों का माना जाता है। इसमें अपराजिता देवी की पूजा होती है। यह पूजन भी सर्वसुख देने वाला है। दशहरा या विजयादशमी नवरात्रि के बाद दसवें दिन मनाया जाता है। भगवान राम युद्ध की देवी मां दुर्गा के भक्त थे, उन्होंने युद्ध के दौरान पहले नौ दिनों तक मां दुर्गा की पूजा की और दसवें दिन दुष्ट रावण का वध किया। इसके बाद राम ने भाई लक्ष्मण, भक्त हनुमान, और बंदरों की सेना के साथ एक बड़ा युद्ध लड़कर सीता को छुड़ाया। इसलिए विजयादशमी बुराई पर अच्छाई, असत्य पर सत्य और अंधकार पर प्रकाश का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिन है।

दशहरा उत्सव की उत्पत्ति के विषय में कई कल्पनायें एवं पहलू हैं। दशहरे का सांस्कृतिक पहलू भी है। यह देश की सांस्कृतिक एकता और अखण्डता को जोड़ने का पर्व भी है। देश के अलग-अलग भागों में वहां की संस्कृति के अनुरूप यह पर्व मनाया जाता है. इस पर्व के माध्यम से सभी का स्वर एवं उद्देश्य यही होता है कि बुराई का नाश किया जाये और अच्छाई को प्रोत्साहन दिया जाये।

भारत कृषि प्रधान देश है। कुछ क्षेत्रों में द्वार पर धान की हरी एवं अनपकी बालिगों को टाँगने तथा मेहूँ आदि को कानों, मस्तक या पगड़ी पर रखने के कृत्य होते हैं। इस तरह नये अनाज का स्वागत करने के रूप में भी इसे मनाया जाता है। कुछ लोगों के मत से यह रणयात्रा का द्योतक है, क्योंकि दशहरा के समय वर्षा समाप्त हो जाती है. नदियों की बाढ़ थम जाती है. धान आदि कोष्ठागार में रखे जाने लगते हैं।

दशहरा शक्ति की साधना, कर्म एवं पूजा का भी पर्व है। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं, शस्त्र-पूजा की जाती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है. शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और बोरी के परित्याग की सप्रेरणा प्रदान करता है।

आज दशहरा का पर्व मनाते हुए सबसे बड़ी जरूरत भीतर के रावण को जलाने की है। भारतीय संस्कृति सदा से ही वीरता व शौर्य की समर्थक रही है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता का प्रादुर्भाव हो, इसी उद्देश्य से भी दशहरे का उत्सव मनाया जाता है। यदि कभी युद्ध अनिवार्य ही हो तब शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा ना कर उस पर हमला कर उसका पराभव करना ही कुशल राजनीति है। भगवान राम के समय से यह दिन विजय प्रस्थान का प्रतीक निश्चित है। भगवान राम ने रावण से युद्ध हेतु इसी दिन प्रस्थान किया था।

स्कंदपुराण के अनुसार गंगा दशहरे के दिन व्यक्ति को किसी भी पवित्र नदी पर जाकर स्नान, ध्यान तथा दान करना चाहिए। इससे वह अपने सभी पापों से मुक्ति पाता है। गंगा स्वर्ग से धरती पर आई थी। इस पवित्र नदी में स्नान करने से पाप नष्ट होते है। इसलिये इसे गंगा दशहरा भी कहा गया है। जय श्री राम। जय हनुमान। बोलिए सच्चे दरबार की जय। जैकारा शेरो वाली माई का, बोल साचे दरबार की जय।

जनसमस्याओं के समाधान में कारगर भूमिका निभा रहे समाधान शिविर : डीसी

जिला स्तरीय समाधान शिविर में डीसी वर्षा खांगवाल ने सुनीं लोगों की समस्याएं

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 19 अक्टूबर।

आमजन की समस्याओं का समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन पूरी सजगता व गंभीरता के साथ कार्य कर रहा है। जिला व उपमंडल स्तर पर आयोजित किए जा रहे समाधान शिविर नागरिकों की समस्याओं के निवारण के लिए प्रभावी मंच साबित हो रहे हैं। यह बात डीसी वर्षा खांगवाल ने सोमवार को लघु सचिवालय सभागार में आयोजित समाधान शिविर में जनसुनवाई के दौरान कही। उन्होंने शिविर में पहुंचे नागरिकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए।



लंबित शिकायतों को आपसी समन्वय से समाधान करें अधिकारी

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा समाधान शिविरों में प्राप्त शिकायतों की लगातार निगरानी की जा रही है। अब तक प्राप्त अधिकांश शिकायतों का समाधान किया जा चुका है, जबकि लंबित शिकायतों के निपटारे के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शिकायतों को केवल दर्ज करने तक सीमित न रखें, बल्कि उनके समाधान की प्रक्रिया पर भी नियमित नजर रखें।

परिवार पहचान पत्र और पेंशन से जुड़े मामले पहुंचे

समाधान शिविर में नागरिक परिवार पहचान पत्र, आयुष्मान कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं से संबंधित समस्याएं लेकर पहुंचे। इसके अलावा पुलिस विभाग से जुड़े मामलों को भी नागरिकों ने अधिकारियों के समक्ष रखा। डीसी ने संबंधित अधिकारियों को प्रत्येक मामले की गंभीरता से जांच कर नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। कई मामलों में मौके पर ही आवश्यक समाधान सुनिश्चित किया गया।

हर वाजिब समस्या का तत्काल समाधान करने का प्रमुख लक्ष्य

डीसी ने कहा कि प्रत्येक सोमवार और गुरुवार को आयोजित होने वाले समाधान शिविरों का उद्देश्य नागरिकों को उनकी समस्याओं के समाधान के लिए सरल और प्रभावी माध्यम उपलब्ध करवाना है। इन शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी एक ही स्थान पर उपस्थित रहते हैं, जिससे नागरिकों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अलग-अलग कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार अंत्योदय की भावना के साथ जनसेवा को प्राथमिकता दे रही है। मुख्यमंत्री की सोच के अनुरूप प्रशासन का प्रयास है कि प्रत्येक नागरिक की समस्या को गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ सुना जाए तथा उसका शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाए।

नागरिकों को प्रभावी समाधान उपलब्ध करवाना ही उद्देश्य

डीसी ने कहा कि समाधान शिविरों का उद्देश्य केवल शिकायतों को सुनना नहीं, बल्कि नागरिकों को प्रभावी समाधान उपलब्ध करवाना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आमजन की समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहते हुए निर्धारित समय में कार्रवाई पूरी करें।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, डीआरओ मनवीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, डीईओ रतिंद्र सिंह, बिजली निगम से एक्सईएन प्रदीप कुमार बूरा, परिवेदना समिति सदस्य सुरेंद्र शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

दावे-आपत्तियों का 28 अक्टूबर तक सुनिश्चित हो निपटान : डीसी

आगामी 6 नवम्बर को होगा अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों को दिए निर्देश

झज्जर, 19 अक्टूबर भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला झज्जर के सभी चारों विधानसभा क्षेत्रों में एसआईआर-2026 के तहत मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य जारी है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने कहा कि अभियान का उद्देश्य प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल करना तथा अपात्र नामों को हटाकर सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाना है। डीसी ने बताया कि एसआईआर-2026 के कार्यक्रम के अनुसार दावे एवं आपत्तियों का निपटारा 28 अक्टूबर तक होगा तथा अंतिम मतदाता सूची 6 नवंबर को प्रकाशित की जाएगी। मतदाता नाम, पता, आयु, फोटो सहित अन्य विवरणों की जांच कर त्रुटि मिलने पर समय रहते सुधार सम्भव है।

डीसी ने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध एवं विश्वसनीय बनाने में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। उन्होंने सभी निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों को एसआईआर प्रक्रिया नियमानुसार पूरी करने के निर्देश दिए हैं।

नया सफर योजना का लाभ उठाएं वाहन मालिक : डीसी

पुराने वाहनों की अपेक्षा आधुनिक परिवहन अपनाना पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहद जरूरी -डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों की बैठक में दिए नया सफर योजना के बेहतर क्रियान्वयन के निर्देश

झज्जर, 19 अक्टूबर

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि स्वच्छ एवं हरित परिवहन व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सभी वाहन स्वामियों की भागीदारी जरूरी है, ऐसे में सभी वाहन मालिक पुराने वाहनों की बजाय आधुनिक परिवहन अपनाने के लिए आगे आएं। उन्होंने कहा कि वाहन मालिक योजना का स्वयं लाभ उठाते हुए दूसरे लोगों को लाभ के लिए प्रेरित करें।

डीसी सोमवार को सम्बन्धित अधिकारियों की बैठक में नया सफर योजना की समीक्षा कर रही थी। ड़ीटीओ रवीश हुड्डा ने नया सफर योजना/परिवर्तन स्कीम के विभिन्न प्रावधानों, पात्रता तथा लाभों की विस्तार से जानकारी दी। डीसी वर्षा खांगवाल ने स्कूल वाहनों की जांच के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्कूल बसों में सभी आवश्यक मानक पूरे होना बेहद जरूरी है। निर्धारित मापदंड पूरा ना करने वाले वाहनों के नियमानुसार चालान किए जाएं। ओवरलोडिंग वाहनों की जांच के भी सख्त निर्देश दिए।

बीएस-6 तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दे वाहन स्वामी

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि इस योजना का उद्देश्य पुराने एवं प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के स्थान पर आधुनिक, सुरक्षित एवं पर्यावरण अनुकूल बीएस-6 तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना है। यदि कोई वाहन स्वामी अपना बीएस-1, बीएस-2 अथवा बीएस-3 श्रेणी का पुराना वाहन स्क्रैप कराकर नया बीएस-6 अथवा इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) खरीदता है तो उसे 10 वर्षों तक मोटर वाहन कर में 100 प्रतिशत छूट प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि यदि कोई वाहन स्वामी अपना बीएस-4 वाहन स्क्रैप कराता है अथवा उसे एनसीआर क्षेत्र से बाहर विक्रय (सेल आउट) करता है तथा नया बीएस-6 वाहन खरीदता है, तो उसे भी 10 वर्षों तक मोटर वाहन कर में 100 प्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा। उन्होंने योजना के अन्य महत्वपूर्ण प्रावधानों, आवेदन प्रक्रिया एवं पात्रता संबंधी जानकारी वाहन मालिकों को प्रदान करने के निर्देश दिए।



जिला परिवहन अधिकारी रवीश हुड्डा ने बताया कि योजना के अंतर्गत पात्र लाभार्थियों को ईंधन कूपन के माध्यम से प्रतिमाह 1,200 रुपये से 4,800 रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। इसके अलावा यदि कोई वाहन स्वामी अपनी पुरानी बस अथवा ट्रक को स्क्रैप कर या विक्रय कर नया इलेक्ट्रिक वाहन खरीदता है, तो उसे 64 हजार रुपये से 2 लाख 56 हजार रुपये तक की एकमुश्त प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाएगी। साथ ही ऐसे लाभार्थियों को 10 वर्षों तक मोटर वाहन कर में 100 प्रतिशत छूट का लाभ भी मिलेगा।

इन विभागों के अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति रहे मौजूद

इस अवसर पर डीईओ रतिंद्र सिंह, एडीटीओ राजेश मलिक सहित प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन, ट्रक यूनियन, व्यवसायिक संस्थाओं के पदाधिकारी व सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बाजरा-धान खरीद प्रक्रिया को सुगम बनाना प्रशासन की प्राथमिकता : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने दी जानकारी -फसल उठान से लेकर किसानों की सुविधाओं तक की जा रही प्रतिदिन मॉनिटरिंग

झज्जर, 19 अक्टूबर

खरीफ फसल खरीद सीजन 2026-27 के दौरान बाजरा और धान की खरीद व्यवस्था सुचारू बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह से सजग है। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा मंडियों और खरीद केंद्रों की नियमित मॉनिटरिंग की जा रही है। यह जानकारी डीसी वर्षा खांगवाल ने सोमवार को यहां दी।

डीसी ने कहा कि मंडियों में किसानों द्वारा फसल लेकर आने से लेकर उनकी फसल की खरीद उपरांत उन्हें निर्धारित पेमेंट देने व खरीदी गई फसल का नियमित उठान को लेकर नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं।

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि झज्जर जिला की आठ अनाज मंडियों एवं खरीद केंद्रों में अधिकारियों की ड्यूटी निर्धारित की हुई है। नियुक्त नोडल अधिकारी खरीद प्रक्रिया की निगरानी कर रहे हैं, जबकि ड्यूटी मजिस्ट्रेट-कम-शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष और सदस्य किसानों व आढ़तियों की समस्याओं के समाधान, परिवहन व्यवस्था, मजदूरों की उपलब्धता और फसल उठान की समीक्षा कर रहे हैं।

किसानों की सुविधाओं पर प्रशासन का विशेष फोकस

जिला प्रशासन की ओर से नियुक्त अधिकारी मंडियों में खरीद प्रक्रिया, परिवहन, मजदूरों की उपलब्धता और खरीदी गई फसल के समय पर उठान की निगरानी करेंगे। शिकायत निवारण समितियां किसानों और आढ़तियों की समस्याओं का समाधान करवाने के साथ मंडियों में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने में भी भूमिका निभाएंगी।

जिला प्रशासन की ओर से मंडियों में प्रवेश एवं निकास द्वार, मुख्य सड़क तक उचित रास्ता, पेयजल, बैठने की व्यवस्था, अस्थायी शौचालय तथा कर्मचारियों और मजदूरों के लिए जरूरी सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए हैं।

दशहरा पर्व को लेकर झज्जर प्रशासन अलर्ट : डीसी

अधिकारियों की टीम ने रावण दहन स्थल का किया संयुक्त निरीक्षण

सुरक्षा, अग्निशमन और यातायात व्यवस्था पुख्ता रखने के निर्देश

सुरक्षा मानकों की पालना में लापरवाही न बरतें आयोजक

झज्जर, 19 अक्टूबर।

दशहरा पर्व के मद्देनजर आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए डीसी वर्षा खांगवाल के निर्देश अनुसार अधिकारियों की टीम ने रावण दहन स्थल का निरीक्षण किया। डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि दशहरा पर्व को लेकर झज्जर प्रशासन पूरी तरह अलर्ट है। उन्होंने आयोजकों से कहा कि कार्यक्रम के दौरान सभी निर्धारित सुरक्षा मानकों की नियमानुसार पालना सुनिश्चित करें और किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरतें। इसी कड़ी में सोमवार को एसडीएम रवि मीणा ने सम्बंधित अधिकारियों के साथ रावण दहन स्थल, पुराना बस स्टैंड और भगत सिंह चौक, झज्जर का संयुक्त रूप से निरीक्षण किया।



एसडीएम रवि मीणा ने निरीक्षण के दौरान संबंधित व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए आयोजकों को सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि रावण दहन कार्यक्रम के दौरान अग्निशमन उपकरणों की पर्याप्त व्यवस्था रखी जाए तथा किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक इंतजाम पहले से किए जाएं। अधिकारियों ने आयोजन स्थलों पर भीड़ को नियंत्रित करने, आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित करने और यातायात व्यवस्था सुचारू बनाए रखने के निर्देश दिए।

डीसी बुधवार को सुनेंगी नागरिकों की समस्याएं

सुबह 11 बजे लघु सचिवालय स्थित कैंप कार्यालय में होगी जनसुनवाई, सभी विभागों के अधिकारी रहेंगे मौजूद

बहादुरगढ़, 19 अक्टूबर।

बहादुरगढ़ क्षेत्र के नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए बुधवार, 21 अक्टूबर को लघु सचिवालय बहादुरगढ स्थित कैंप कार्यालय में जनसुनवाई होगी। डीसी वर्षा खांगवाल बुधवार सुबह 11 बजे नागरिकों की समस्याएं सुनेंगी और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देंगी।

जनसुनवाई के दौरान सभी संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहेंगे, ताकि नागरिकों की शिकायतों पर उचित कार्रवाई की जा सके। नागरिकों से अपील है की कि वे निर्धारित समय पर पहुंचकर अपनी समस्याएं प्रशासन के समक्ष रखते हुए समाधान करवाएं।



वायु प्रदूषण पर प्रशासन सख्त, हॉटस्पॉट गांवों पर विशेष निगरानी

वायु प्रदूषण फैलाने वालों पर शिकंजा, लापरवाही पर होगी कार्रवाई

डीसी वर्षा खांगवाल ने ग्रेप की पालना के दिए निर्देश, पराली जलाने से लेकर औद्योगिक प्रदूषण तक पर रहेगी नजर

झज्जर, 19 अक्टूबर

जिला में वायु प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए जिला प्रशासन ने सख्ती बढ़ा दी है। डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को संशोधित ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) की पालना सुनिश्चित करने और प्रदूषण प्रभावित क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण में कोताही बरतने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

डीसी ने औद्योगिक इकाइयों, डीजल जनरेटर, वाहनों के धुएं, सड़कों की धूल, खुले में कचरा जलाने और निर्माण गतिविधियों से होने वाले प्रदूषण पर प्रभावी रोक लगाने को कहा। सड़कों की नियमित सफाई, मैकेनिकल व वैक्यूम स्वीपिंग और जरूरत के अनुसार पानी का छिड़काव करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि अवैध आरएमसी और हॉट मिक्स प्लांट इकाइयों पर भी कार्रवाई की जाएगी।

बहादुरगढ़ क्षेत्र के परनाला, बामनोली, लडरावन, कसार, मुकंदपुर, खैरपुर, कानोंदा और गुभाना गांवों में पराली जलाने की घटनाओं पर विशेष निगरानी रखी जाएगी। डीसी ने अधिकारियों को किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के वैकल्पिक उपायों के प्रति जागरूक करने के निर्देश भी दिए।

उन्होंने आमजन से खुले में कचरा व फसल अवशेष नहीं जलाने और प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों की सूचना संबंधित विभागों को देने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक प्रयासों के साथ जनसहयोग से ही प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है।



भगवान वाल्मीकि की शिक्षाएं सामाजिक समानता और भाईचारे की मजबूत आधारशिला : कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी

कहा, महापुरुषों की जयंती पर प्रदेशभर में हो रहे कार्यक्रम, संत-महापुरुषों के विचारों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए सरकार कर रही है प्रयास

हरियाणा/हिसार (सोनम सलूजा)

हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने सोमवार को गांव बिठमड़ा में भगवान वाल्मीकि मंदिर कमेटी की ओर से भगवान वाल्मीकि जयंती के प्रकट दिवस पर आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

अपने संबोधन में कैबिनेट मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा कि भगवान वाल्मीकि का जीवन और उनका साहित्य मानवता के लिए प्रेरणास्रोत है। इस दौरान उन्होंने अपने ऐच्छिक कोष से वाल्मीकि चौपाल के निर्माण के लिए 11 लाख रुपये तथा वाल्मीकि मंदिर के लिए 5 लाख रुपये देने की घोषणा की। इसके अलावा ग्राम पंचायत द्वारा गांव में लाइब्रेरी स्थापित करने की मांग पर कैबिनेट मंत्री ने कहा कि पंचायत द्वारा जमीन उपलब्ध करवाए जाने के बाद लाइब्रेरी निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। उन्होंने कहा कि भगवान वाल्मीकि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को सत्य, न्याय, मर्यादा, करुणा और सदाचार का मार्ग दिखाया। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जो पीढ़ियों से लोगों को नैतिकता, कर्तव्य और आदर्श जीवन की प्रेरणा देती आ रही है। उन्होंने कहा कि भगवान वाल्मीकि की शिक्षाएं समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए प्रासंगिक हैं। उनके विचार हमें सिखाते हैं कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान, समान अवसर और आगे बढने का अवसर मिले। महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में व्याप्त भेदभाव को दूर करने और सामाजिक समरसता को मजबूत करने की दिशा में सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा सरकार संत-महापुरुषों के जीवन, विचारों और सामाजिक योगदान को सम्मान देने तथा उनकी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए



प्रतिबद्ध है। संत-महापुरुष सम्मान एवं विचार प्रसार योजना के तहत विभिन्न महापुरुषों की जयंती और विशेष अवसरों पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन आयोजनों का उद्देश्य समाज सुधारकों, संतों और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले महान व्यक्तित्वों के विचारों से नई पीढ़ी को परिचित करवाना है। कैबिनेट मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा कि महापुरुषों की जयंती केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को आत्मसात करने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने का भी अवसर है। उन्होंने कहा कि समाज की उन्नति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने के साथ-साथ उन्हें महापुरुषों के जीवन और उनके विचारों से परिचित करवाना भी जरूरी है। इससे उनमें नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारी और देश के प्रति समर्पण की भावना विकसित होती है। कैबिनेट मंत्री ने भगवान वाल्मीकि जयंती के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए उनके आदर्शों पर चलने और समाज में प्रेम, सद्भाव तथा भाईचारे को बढ़ावा देने का आह्वान किया। इस दौरान कैबिनेट मंत्री ने प्रतिभावान युवाओं को सम्मानित किया और जीवन में आगे बढक़र माता-पिता व समाज का नाम रोशन करने के लिए भी प्रेरित किया।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री अनूप धानक, बरवाला एसडीएम अश्वीर नैन, जिला कल्याण अधिकारी महाबीर गोदारा, पूर्व चेयरमैन श्रीनिवास गोयल, ज्वाइंट कमिश्नर कृष्ण कुमार, कुलदीप धत्तरवाल, पंच नरेश कुमार सोनी, ब्लॉक समिति चेयरमैन रविंद्र मलिक, ब्लॉक समिति वाइस चेयरमैन किरण, वाल्मीकि समाज कल्याण ट्रस्ट के प्रधान विपिन कुमार, बरवाला हल्का मीडिया प्रभारी कमल हंदूजा, मंडल मीडिया प्रभारी भाजपा बरवाला राजेश सलूजा, सुंदर नागर, राकेश कस्वा, उप प्रधान सुनील चौहान, सचिव संजय, बलजीत, जितेंद्र, बाडो पट्टी सरपंच पवन कुमार, गुरचरण, राजा इंदौरा, रोशन लाल, युवा मोर्चा कार्यकारिणी सदस्य शुभम मदान, राजेंद्र कुमार, वजीर सिंह, साहेब सिंह, राजेश सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

प्रिया गोल्ड बिस्कुट में पशुओं का चारा? FSSAI की बड़ी कार्रवाई — लाइसेंस निलंबित

उपभोक्ता की शिकायत पर हुआ खुलासा, सूर्य फूड एंड एग्रो लिमिटेड के खिलाफ अभियोजन शुरू — जनहित में जनता को सचेत रहने की अपील

प्रस्तुति: मीनाक्षी गुप्ता स्वतंत्र पत्रकार परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक — जनहित, जनकल्याण, जनसूचना हेतु

मुख्य तथ्य

- **कंपनी:** सूर्य फूड एंड एग्रो लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश) — प्रिया गोल्ड (Priyagold) बिस्कुट निर्माता
- **घोषणा तिथि:** 17 अक्टूबर 2026 — FSSAI द्वारा आधिकारिक पोस्ट
- **शिकायत:** एक उपभोक्ता की शिकायत के बाद FSSAI ने प्लांट का निरीक्षण किया
- **आरोप:** बिस्कुट में फाइबर के स्रोत के रूप में पशुओं के चारे के लिए बना चोकर (cattle feed bran) इस्तेमाल हो रहा था, जो मानव उपभोग के लिए नहीं था
- **प्रमाण:** चोकर की गनी बैग्स पर ही अंकित था — "पशु आहार के लिए"
- **कार्रवाई:** लाइसेंस निलंबित + अभियोजन (Prosecution) की कार्यवाही शुरू

क्या-क्या खामियां मिलीं? — विस्तृत विवरण FSSAI के निरीक्षण में केवल एक कच्चे माल की गड़बड़ी ही नहीं मिली, बल्कि पूरे प्लांट में गंभीर खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता संबंधी उल्लंघन पाए गए:

1. **कच्चे माल की गड़बड़ी:** पशु चारे का चोकर बिस्कुट के कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल होना
2. **प्लांट हाइजीन:** संयंत्र की साफ-सफाई में भारी कमी
3. **कीट नियंत्रण:** पेस्ट कंट्रोल की व्यवस्था अनुपयुक्त
4. **भंडारण और पृथक्करण:** कच्चे माल का भंडारण और अलगाव सही नहीं
5. **स्टाफ हाइजीन:** कर्मचारियों की व्यक्तिगत स्वच्छता में लापरवाही
6. **परिसर रखरखाव:** परिसर के रखरखाव में गंभीर कमी
7. **इंटरमीडिएट फॉर्मूलेशन:** मध्यवर्ती उत्पादों की हैंडलिंग में गड़बड़ी

अन्य कंपनियों पर भी कार्रवाई इसी क्रम में FSSAI ने:

- Dodla Dairy Ltd — फुल क्रीम दूध के नमूने में मिल्क फैट मानक से कम, बाद में डिटर्जेंट/कास्टिक सोडा की पुष्टि का दावा
- UeIR Organic Foods Pvt Ltd — पीली किशमिश में कीटनाशक अवशेष

इनके खिलाफ भी अभियोजन की कार्रवाई स्वीकृत की गई। साथ ही Nestlé India और Hindustan Unilever को लेबलिंग और भ्रामक दावों पर नोटिस जारी किए गए।

नेपाल ने भी लगाया प्रतिबंध 19 अक्टूबर 2026 को नेपाल ने भी भारत की कार्रवाई के बाद प्रिया गोल्ड बिस्कुट के आयात, बिक्री और वितरण पर प्रतिबंध लगा दिया।

जनहित में अपील — उपभोक्ता क्या करें?

- यदि आपने प्रिया गोल्ड बिस्कुट खरीदा है, तो उसकी बैच/मैन्युफैक्चरिंग जानकारी की जांच करें
- संदेह होने पर सेवन से बचें और FSSAI या स्थानीय खाद्य सुरक्षा अधिकारी को शिकायत करें
- किसी भी अफवाह पर भरोसा न करें — केवल FSSAI की आधिकारिक घोषणा को आधार मानें

निष्कर्ष: यह कार्रवाई दर्शाती है कि खाद्य सुरक्षा केवल कागजी खानापूर्ति नहीं है। एक उपभोक्ता की जागरूकता से एक बड़ी गड़बड़ी उजागर हुई। अब यह कंपनी की जिम्मेदारी है कि वह सुधार करे और उपभोक्ताओं का विश्वास पुनः स्थापित करे।



मीना बाजार में आग की घटना ने खोली अग्नि सुरक्षा की पोल





ट्रेड फेयर से गरबा आयोजनों तक सुरक्षा इंतजामों पर सवाल, हादसा होने पर जवाबदेही किसकी?

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

सेक्टर-6 स्थित मीना बाजार में रविवार को एक फास्ट फूड स्टॉल में शॉर्ट सर्किट से लगी मामूली आग ने शहर की अग्नि सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस और अग्निशमन विभाग की तत्परता से आग पर काबू पा लिया गया, लेकिन यह घटना एक बड़े खतरे की ओर संकेत करती है। सवाल यह है कि यदि आग मामूली न होकर भीषण होती और वहां मौजूद लोगों की जान खतरे में पड़ जाती, तो इसकी जिम्मेदारी आखिर कौन लेता?

दुर्गापूजा के दौरान शहर में मेले, खाद्य स्टॉल, अस्थायी दुकानें और सार्वजनिक आयोजन बड़ी संख्या में लगाए जाते हैं। ऐसे स्थानों पर बिजली के अस्थायी कनेक्शन, ज्वलनशील सजावटी सामग्री, गैस चूल्हे और भीड़ का दबाव आग के जोखिम को बढ़ा सकते हैं। इसके बावजूद आयोजनों से पहले सुरक्षा मानकों के प्रभावी सत्यापन को लेकर सवाल उठना चिंताजनक है।

रील बनाने से नहीं, जवाबदेही से सुनिश्चित होगी सुरक्षा

बड़े ट्रेड फेयर, गरबा कार्यक्रमों और पूजा पंडालों में अग्नि सुरक्षा प्रमाणपत्र, अग्निशामक उपकरण, आपातकालीन निकास तथा बिजली की सुरक्षित व्यवस्था की जांच जरूरी है। हाल के गरबा आयोजनों और अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों में आवश्यक प्रमाणपत्रों की उपलब्धता को लेकर उठ रही शिकायतों की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। हालांकि, संबंधित आयोजनों के दस्तावेजों की स्वतंत्र पुष्टि के बिना यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि सभी आयोजनों के पास अनिवार्य अनुमति नहीं थी।

ओडिशा के अग्नि सुरक्षा नियमों के अनुसार, निर्धारित सीमा वाले अस्थायी ढांचों—एक हजार वर्गमीटर या अधिक क्षेत्रफल अथवा दो हजार या अधिक लोगों की संभावित उपस्थिति वाले आयोजनों—के लिए निर्धारित प्रक्रिया के तहत अग्नि सुरक्षा अनुशंसा और प्रमाणपत्र का प्रावधान है।

सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उठाई कार्रवाई की मांग

सामाजिक कार्यकर्ताओं और नागरिक संगठनों को इस मामले में संबंधित अधिकारियों से जवाब मांगना चाहिए। राउरकेला महानगर निगम, अग्निशमन विभाग और आयोजन की अनुमति देने वाली एजेंसियां संयुक्त निरीक्षण कर नियमों के अनुपालन की स्थिति सार्वजनिक करें। जहां उल्लंघन मिले, वहां नियमानुसार कार्रवाई हो।

मॉल और संस्थानों में निरीक्षण की तस्वीरें या वीडियो सामने आना पर्याप्त नहीं है; जनता को ठोस कार्रवाई और जांच के परिणाम भी दिखने चाहिए। आग लगने के बाद सक्रियता से अधिक जरूरी है आग लगने से पहले सुरक्षा सुनिश्चित करना। जनसुरक्षा को लेकर किसी भी विभाग की लापरवाही स्वीकार्य नहीं हो सकती।

लौह अयस्क परिवहन में स्थानीय कारोबारियों की अनदेखी, संकट में छोटे ट्रांसपोर्टर

परिवहन माफिया के बढ़ते प्रभाव और व्यवस्था में कथित मिलीभगत के आरोपों के बीच स्थानीय परिवहन व्यवसायियों के सामने अस्तित्व का संकट; 98 प्रतिशत परिवहन लाइसेंस ठप होने का दावा जांच और जवाबदेही की मांग उठाता है।

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला/सुंदरगढ़



ओडिशा के खनिज बहुल सुंदरगढ़ जिले में लौह अयस्क परिवहन का कारोबार स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार का महत्वपूर्ण आधार है। लेकिन इसी कारोबार में स्थानीय परिवहन व्यवसायियों की भागीदारी, माल ढुलाई की दरों और अवसरों के समान वितरण को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। खदानों से इस्पात संयंत्रों तक लौह अयस्क पहुंचाने वाले छोटे ट्रक मालिकों और स्थानीय ट्रांसपोर्टरों के सामने कारोबार बचाने की चुनौती खड़ी होती दिखाई दे रही है।

परिवहन व्यवसायियों की ओर से आरोप लगाया जा रहा है कि प्रभावशाली परिवहन समूहों और कथित माफिया तंत्र की बढ़ती पकड़ ने स्वतंत्र कारोबारियों के लिए रास्ते कठिन कर दिए हैं। उनका दावा है कि शासन-प्रशासन के स्तर पर कथित मिलीभगत और प्रभाव के इस्तेमाल के कारण लगभग 98 प्रतिशत परिवहन लाइसेंस या उनसे जुड़ी व्यावसायिक गतिविधियां ठप पड़ी हैं। हालांकि, इस आंकड़े की स्वतंत्र पुष्टि उपलब्ध सार्वजनिक आंकड़ों से नहीं होती; इसलिए संबंधित विभाग को लाइसेंसवार स्थिति सार्वजनिक करनी चाहिए।

बड़े समूहों का दबदबा, छोटे कारोबारियों की मुश्किलें

ओडिशा में खनिज परिवहन को लेकर प्रतिस्पर्धा और मालभाड़े के निर्धारण का विवाद नया नहीं है। वर्ष 2015 में सुंदरगढ़ और क्योंझर के परिवहन संगठनों की हड़ताल के दौरान हजारों वाहन प्रभावित हुए थे। उस समय भी परिवहन लागत और दरों को लेकर कारोबारियों ने चिंता जताई थी।

इसी तरह, जून 2026 के एक न्यायिक मामले में ट्रक संगठनों पर बाजार दरों से अधिक मालभाड़ा निर्धारित करने और वाहनों का पंजीकरण अनिवार्य कर अपनी शर्तें लागू करने जैसे आरोप दर्ज हुए। ये आरोप न्यायिक अभिलेख का हिस्सा हैं; इन्हें सभी परिवहन संगठनों के विरुद्ध सिद्ध तथ्य नहीं माना जा सकता।

सरकारी आंकड़ों और जमीनी दावों की जांच जरूरी

ओडिशा के खान एवं इस्पात विभाग के परिवहन पंजीकरण पोर्टल पर उपलब्ध आंकड़ों में 3,300 आवेदन दर्ज हैं, जिनमें 3,075 स्वीकृत, 87 प्रक्रियाधीन और 106 अस्वीकृत बताए गए हैं। ये आंकड़े अपने आप में यह साबित नहीं करते कि 98 प्रतिशत लाइसेंस ठप हैं। हालांकि, आवेदन की स्वीकृति और वास्तविक कारोबार मिलने के बीच का अंतर जांच का विषय है।

छोटे ट्रांसपोर्टरों का संकट केवल लाइसेंस तक सीमित नहीं है। वाहन की किस्त, बीमा, रखरखाव, चालक का वेतन और ईंधन खर्च लगातार उठाना पड़ता है, जबकि नियमित माल नहीं मिलने पर वाहन खड़ा रहने लगता है। इसका असर चालकों, सहायकों, मरम्मत दुकानों और स्थानीय बाजार पर भी पड़ता है।

अब आवश्यकता है कि राज्य सरकार और खनन विभाग परिवहन लाइसेंस, ठेकों, मालभाड़े, वाहन आवंटन तथा शिकायतों की निष्पक्ष जांच कराएं। यदि कहीं संगठित दबाव, एकाधिकार या प्रशासनिक संरक्षण के प्रमाण मिलते हैं, तो जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई हो। खनिज संपदा से समृद्ध क्षेत्र में परिवहन का लाभ केवल प्रभावशाली समूहों तक सीमित रहना स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार—दोनों के हित में नहीं है।

साल में एक बार खुलने वाले कानपुर के प्राचीन मंदिर में आज होगी रावण की पूजा

– कानपुर में 134 साल पहले 1890 में महाराज जयप्रकाश शुक्ला ने प्रयाग नारायण शिवाला में कराया था रावण मंदिर का निर्माण

सुनील बाजपेई



कानपुर। असत्य पर सत्य की जीत के लिए मनाये जाने वाले दशहरे पर शिवाला स्थित मंदिर में आज दशहरे को रावण की पूजा की जाएगी ,जिसमें सैकड़ो लोग भाग लेंगे

यहां सिर्फ दशहरे के दिन साल में एक बार इस रावण मंदिर का पट खोला जाता है। इस मंदिर का नाम दशानन मंदिर है और इसका निर्माण 1890 में हुआ था।

इसके लिए आज दशहरे को सुबह से ही दशानन मंदिर के साफ सफाई और श्रृंगार पूजन के बाद भक्तों के लिए खोल दिया जाएगा। भक्तों ने लंकापति रावण के दर्शन कर सुख समृद्धि और परिवार कल्याण की कामना करेंगे। साल में केवल एक बार दशहरे के दिन मंदिर खुलने के कारण सुबह से ही मंदिर को बाहर भक्तों की भीड़ एकत्र होती है। यहां बारी बारी भक्तों ने लंकापति को प्रसाद और पुष्प अर्पित किया जाता है। भक्तों द्वारा रावण की आरती उतारी जाती है।

इस बारे में भक्तों में मान्यता है कि लंकापति के दर्शन करने से परिवार और बच्चों का कल्याण होता है। आज दशहरे वाले दिन संध्याकाल में रावण के पुतला दहन के पहले इस मंदिर के दरवाजे एक साल के लिए बंद कर दिए जाएंगे हैं। इस मंदिर का निर्माण करीब 134 साल पहले महाराज गुरू प्रसाद शुक्ल ने कराया था।

नव श्री केशव रामलीला कमेटी रोहिणी : नेपाल की राजधानी काठमांडू से देखने आए नव श्री केशव रामलीला कमेटी की रामलीला

रामलीला के 9वें दिन कुंभकरण वध व मेघनाथ वध संवाद ने लोगों को किया भावुक



नई दिल्ली: राजधानी दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, सेक्टर 11 के सामने भगवान गणेश के आह्वान के साथ नव श्री केशव रामलीला कमेटी के 9वें दिन कुंभकरण वध व मेघनाथ वध संवाद ने लोगों को किया भावुक। इस अवसर पर नव श्री केशव रामलीला कमेटी के चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी ने कहा कि रामलीला का मंच भारतीय संस्कृति की धरोहर है, जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम मर्यादा में रहकर व सत्य के मार्ग पर चलकर ही विजय हासिल करते है। ऐसी प्रेरणा रामलीला मंचन के माध्यम से युवा पीढ़ी को मिलती है।

आज की रामलीला की खास बात यह रही की अनिल मित्तल, गौरव मित्तल, रोशन मित्तल नेपाल की राजधानी काठमांडू से नव श्री केशव रामलीला की रामलीला देखने को आए दिल्ली आए हुए है, जो अनिल मित्तल जो लीला मंत्री हरि कृष्ण मित्तल के भतीजे है, गौरव मित्तल, रोशन मित्तल पौते हैं, वह काठमांडू रहते है, उन्होंने दिल्ली के रोहिणी में हो रही नव श्री केशव रामलीला कमेटी की रामलीला देखने की इच्छा थी। उन्होंने बताया कि दिल्ली की रामलीला सच में बहुत ही सुन्दर है। इससे पहले नरेश मित्तल जी रामलीला देखने आए थे। रामलीला में कुंभकरण व मेघनाथ वध के संवाद ने दर्शकों को भावुक किया, जिसमें कुंभकरण को जगाने की कोशिश, उसके युद्ध में पराजित होने का दृश्य और फिर मेघनाथ के वीरगति प्राप्त करने के बाद लंका में मचे हाहाकार ने दर्शकों को भावुक व दुखी किया। यह मंचन दर्शकों के बीच बहुत प्रसिद्ध होता है और इसमें लंका में छाए शोक व परिवार के सदस्यों की प्रतिक्रिया को भी दिखाया जाता है।

उन्होंने बताया कि इस बार त्रिदेव थीम पर इस बार तीन मंजिला भव्य स्टेज पर लीला का मंचन हो रहा है। इस अवसर पर संस्था के प्रेरणा स्तोत्र व दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही, चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण जिंदल, कोषाध्यक्ष दिनेश सर्राफ, लीला महामंत्री हरि किशन मित्तल, कार्यालय महामंत्री पुरुषोत्तम लाल सिंघल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम का यह 30वां वर्ष है।



पशु-पक्षियों और प्रकृति से हमारा अटूट रिश्ता





● डॉ. विजय गर्ग



प्रकृति जीवन का एक विशाल और परस्पर जुड़ा हुआ तंत्र है, जिसमें प्रत्येक जीव की अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मनुष्य, पशु और पक्षी अलग-अलग इकाइयाँ नहीं, बल्कि एक ही प्राकृतिक संसार के अभिन्न अंग हैं। सुबह पक्षियों की मधुर चहचहाहट से लेकर जंगलों और खेतों में विचरते पशुओं तक, प्रकृति हमें निरंतर याद दिलाती है कि जीवन सह-अस्तित्व से ही फलता-फूलता है। पशु-पक्षियों के साथ हमारा संबंध केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि पारिस्थितिक, सांस्कृतिक और पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

पशु-पक्षियों का पारिस्थितिक महत्त्व

पशु और पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखने में अनेक महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं। पक्षी बीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते हैं, फूलों के परागण में सहायता करते हैं और कीटों की संख्या को नियंत्रित रखते हैं। मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और अन्य परागण करने वाले जीव पौधों के प्रजनन में सहायता करते हैं। इनमें से अनेक पौधे हमें भोजन भी प्रदान करते हैं।

शिकारी जीव अन्य प्रजातियों की आबादी को नियंत्रित करके पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हैं। केंचुए मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं, जबकि अनेक छोटे जीव पोषक तत्त्वों को प्राकृतिक चक्र में वापस पहुँचाने में सहायता करते हैं।

प्रत्येक प्रजाति, चाहे वह छोटी हो या सामान्य दिखाई देती हो, प्रकृति के संचालन में अपना योगदान देती है। जब कोई प्रजाति विलुप्त हो जाती है, तो उसके प्रभाव दूर-दूर तक दिखाई दे सकते हैं। परागण करने वाले जीवों की कमी कृषि उत्पादन और खाद्य सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है। इसी प्रकार, शिकारी जीवों की संख्या घटने से पूरी खाद्य श्रृंखला का संतुलन बिगड़ सकता है।

इसलिए पशु-पक्षियों की रक्षा केवल दया का कार्य नहीं, बल्कि पारिस्थितिक स्थिरता और मानव कल्याण में निवेश है।

मानव जीवन से गहरा संबंध

पशु-पक्षी मानव सभ्यता के आरंभ से ही हमारे साथी रहे हैं। उन्होंने मनुष्य को साथ दिया, कृषि कार्यों में सहायता की, परिवहन में योगदान दिया और जीवन की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद की। गाय, भैंस, घोड़े, कुत्ते और अन्य पालतू पशु ग्रामीण जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। पक्षियों के रंगों, मधुर गीतों और उड़ने की अद्भुत क्षमता ने कवियों, कलाकारों, वैज्ञानिकों और विचारकों को सदैव प्रेरित किया है।

भारतीय संस्कृति में भी पशु-पक्षियों का लोककथाओं, त्योहारों, धार्मिक परंपराओं और नैतिक शिक्षाओं में विशेष स्थान है। जीवों के प्रति दया हमें सिखाती है कि प्रत्येक जीवन सम्मान का अधिकारी है। पशुओं से जुड़ी कहानियाँ बच्चों को साहस, निष्ठा, सहयोग और करुणा जैसे गुण सिखाती हैं।

हालाँकि, अन्य प्रजातियों के साथ हमारा संबंध केवल उनकी उपयोगिता पर आधारित नहीं होना चाहिए। पशु-पक्षियों की अपनी आवश्यकताएँ और जीवन जीने के तरीके हैं। उनका सम्मान करने का अर्थ है उनके अस्तित्व के महत्त्व को स्वीकार करना और उन्हें अनावश्यक पीड़ा से बचाना।

वन्यजीवों के सामने बढ़ते खतरे

प्रकृति से गहरे संबंध के बावजूद मानवीय गतिविधियाँ पशु-पक्षियों के लिए लगातार खतरे उत्पन्न कर रही हैं। वनों की कटाई, शहरीकरण, औद्योगिक प्रदूषण, गहन कृषि और आर्द्रभूमियों का विनाश प्राकृतिक आवासों को कम कर रहे हैं। सड़कें और इमारतें पारिस्थितिक तंत्रों को खंडित कर देती हैं, जबकि कीटनाशक और प्लास्टिक कचरा असंख्य जीवों के लिए खतरा बनते हैं।

जलवायु परिवर्तन इस समस्या को और गंभीर बना रहा है। बढ़ता तापमान, वर्षा के बदलते स्वरूप, सूखा और चरम मौसमी घटनाएँ जीवों के प्रजनन चक्र, प्रवास और भोजन की उपलब्धता को प्रभावित कर सकती हैं। पक्षियों को घोंसले बनाने के लिए उपयुक्त स्थान खोजने में कठिनाई होती है, जबकि अन्य जीव पानी और आश्रय की तलाश में अपने प्राकृतिक आवास छोड़ने के लिए विवश हो सकते हैं।

शहरों और गाँवों में सामान्य पक्षियों की संख्या में गिरावट भी चिंता का विषय है। पेड़ों की कमी, हरित क्षेत्रों का सिकुड़ना, घोंसले बनाने के लिए स्थानों का अभाव और भोजन की घटती उपलब्धता पक्षियों के जीवन को कठिन बना रहे हैं। यह स्थिति बताती है कि पर्यावरण का विनाश केवल दूर-दराज के जंगलों की समस्या नहीं, बल्कि हमारे आसपास भी मौजूद है।

करुणा को कार्य में बदलना आवश्यक

पशु-पक्षियों की रक्षा छोटे, लेकिन सार्थक प्रयासों से शुरू होती है। हम स्थानीय प्रजातियों के पेड़ लगा सकते हैं, मौजूदा वनस्पति की रक्षा कर सकते हैं और ऐसे हरित क्षेत्र विकसित कर सकते हैं, जो जीवों को भोजन तथा आश्रय प्रदान करें।

गर्मियों के दौरान सुरक्षित स्थानों पर उथले बर्तनों में स्वच्छ पानी रखना पक्षियों और अन्य छोटे जीवों के लिए उपयोगी हो सकता है। इन बर्तनों को नियमित रूप से साफ करना और पानी बदलना भी आवश्यक है।

हमें प्लास्टिक, रसायनों और अन्य कचरे को तालाबों, नदियों तथा खुले स्थानों पर फेंकने से बचना चाहिए। वन्यजीवों को भोजन खिलाते समय भी सावधानी जरूरी है, क्योंकि अनुपयुक्त भोजन उन्हें नुकसान पहुँचा सकता है। घायल पशुओं और पक्षियों को स्वयं संभालने के बजाय प्रशिक्षित बचावकर्मियों या संबंधित वन्यजीव अधिकारियों की सहायता लेनी चाहिए।

विद्यालयों में प्रकृति भ्रमण, पक्षी अवलोकन, वृक्षारोपण अभियान और पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। विद्यार्थियों को घोंसलों की रक्षा करने, वन्यजीवों को बिना परेशान किए देखने और जैव विविधता के महत्त्व को समझने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

सरकारों, शिक्षण संस्थानों, किसानों और नागरिकों को जंगलों, आर्द्रभूमियों तथा घास के मैदानों की रक्षा के लिए मिलकर काम करना चाहिए। प्रभावी वन्यजीव संरक्षण के लिए पर्यावरणीय कानूनों का पालन, प्रदूषण में कमी और सतत विकास भी आवश्यक हैं।

सह-अस्तित्व पर आधारित भविष्य का निर्माण

मानव प्रगति का वास्तविक माप केवल तकनीकी उपलब्धियों, आर्थिक विकास या शहरीकरण से नहीं होता। यह इस बात से भी निर्धारित होता है कि हम कमजोर जीवों की रक्षा और जीवन को सहारा देने वाली प्राकृतिक प्रणालियों का संरक्षण कितनी जिम्मेदारी से करते हैं।

जो बच्चे पशु-पक्षियों की देखभाल करना सीखते हैं, उनमें सहानुभूति, जिम्मेदारी और विविधता के प्रति सम्मान विकसित होता है। ये गुण न केवल पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाते हैं, बल्कि समाज की नैतिक नींव को भी मजबूत बनाते हैं।

हमारी पृथ्वी केवल मनुष्यों की नहीं है। यह लाखों प्रजातियों का साझा घर है, जिनमें से प्रत्येक का जीवन के जटिल जाल में अपना स्थान है। पक्षियों की चहचहाहट, जंगलों में विचरते पशु और जलस्रोतों के आसपास रहने वाले जीव हमारे संसार को अनेक प्रकार से समृद्ध बनाते हैं।

पशु-पक्षियों के साथ हमारा रिश्ता अटूट है, क्योंकि हमारा अस्तित्व उनकी सुरक्षा और प्राकृतिक संतुलन से जुड़ा हुआ है। यदि हम उनके आवासों की रक्षा करें, उनके जीवन का सम्मान करें और मानवीय गतिविधियों से होने वाले नुकसान को कम करें, तो हम अपने भविष्य को भी सुरक्षित बनाएँगे।

आइए, करुणा को अपने निर्णयों का आधार और संरक्षण को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ। एक स्वस्थ पृथ्वी तभी संभव है, जब मनुष्य केवल प्रकृति में रहना ही नहीं, बल्कि प्रत्येक जीव के साथ जिम्मेदारी और सद्भाव से रहना भी सीखे।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य | प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर. मलोट, पंजाब –

छाँव से साँसों तक: पेड़ों का अनमोल योगदान

डॉ. विजय गर्ग



पेड़ प्रकृति द्वारा मानवता को दिए गए सबसे अनमोल उपहारों में से एक हैं। वे तपती गर्मियों में छाँव देते हैं, ऑक्सीजन छोड़ते हैं, कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करते हैं, जीव-जंतुओं को भोजन और आश्रय प्रदान करते हैं तथा पर्यावरण का नाजुक संतुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं। फिर भी, जीवन के लिए इतना महत्त्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद, पेड़ों को अक्सर सड़कों, इमारतों और व्यावसायिक विकास के मार्ग में बाधा समझा जाता है। उनका वास्तविक मूल्य केवल लकड़ी या पैसों में नहीं आँका जा सकता। पेड़ जीवंत संपदा हैं, जिनके लाभ हमारे द्वारा ली जाने वाली साँसों से लेकर आने वाली पीढ़ियों के भविष्य तक फैले हुए हैं।

छाँव और सुंदरता से कहीं अधिक

पेड़ का सबसे पहला उपहार, जिसे हम महसूस करते हैं, उसकी छाँव है। इसकी शाखाओं के नीचे लोग गर्मी से राहत पाते हैं, राहगीर विश्राम करते हैं, बच्चे खेलते हैं और पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं। गाँवों में पेड़ परंपरागत रूप से मेल-मिलाप के केंद्र रहे हैं, जहाँ लोग बातचीत करते हैं, सामुदायिक समस्याओं पर विचार-विमर्श करते हैं और आपसी संबंधों को मजबूत बनाते हैं। शहरों में कंक्रीट की इमारतों और व्यस्त सड़कों के बीच पेड़ हरियाली के सुखद स्थान प्रदान करते हैं।

लेकिन छाँव उनके योगदान की केवल शुरुआत है। प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करते हैं और सूर्य के प्रकाश की सहायता से अपना भोजन बनाते हैं। इस प्रक्रिया में ऑक्सीजन भी निकलती है। पेड़ हवा में मौजूद कुछ प्रदूषकों को अपने भीतर समाहित करने और पत्तियों पर धूल रोकने में भी मदद करते हैं। हालाँकि, पेड़ सभी प्रकार के प्रदूषण को समाप्त नहीं कर सकते, लेकिन स्वस्थ शहरी हरियाली स्थानीय वायु गुणवत्ता सुधारने और पर्यावरण को अधिक सहनशील बनाने में सहायक होती है।

पेड़ तापमान को नियंत्रित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी घनी छतरी सीधी धूप को रोकती है, जबकि पत्तियों से निकलने वाली नमी आसपास की हवा को ठंडा करती है। इसलिए पेड़ों से घिरी सड़कें कंक्रीट और तारकोल से ढकी खुली सड़कों की तुलना में अधिक आरामदायक हो सकती हैं। बढ़ती गर्मी के इस दौर में प्राकृतिक शीतलता मानव स्वास्थ्य और सुखद जीवन के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो गई है।

जलवायु और जल के रक्षक

जलवायु परिवर्तन से निपटने में पेड़ों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जैसे-जैसे वे बढ़ते हैं, कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करते हैं और कार्बन को अपने तनों, शाखाओं, जड़ों तथा आसपास की मिट्टी में संचित करते हैं। इसलिए पुराने जंगलों की रक्षा और क्षतिग्रस्त भूमि पर हरियाली को पुनः विकसित करना जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में योगदान दे सकता है। हालाँकि, नए पेड़ लगाना पुराने जंगलों को नष्ट करने से हुए नुकसान की पूरी भरपाई नहीं कर सकता, क्योंकि पुराने जंगल जटिल पारिस्थितिकी तंत्रों का आधार होते हैं और बड़ी मात्रा में कार्बन संचित करते हैं।

पेड़ जल चक्र को भी प्रभावित करते हैं। उनकी जड़ें मिट्टी की संरचना सुधारने और पानी को जमीन में समाने में सहायता कर सकती हैं। जंगलों की वनस्पति सतही जल के तेज बहाव को धीमा करती है, मिट्टी का कटाव कम करती है और नदियों तथा झीलों में मिट्टी के कणों के पहुँचने को सीमित करने में मदद करती है। कई क्षेत्रों में ये प्रक्रियाएँ भूजल के पुनर्भरण में सहायक होती हैं और बाढ़ के कुछ प्रभावों को कम कर सकती हैं।

स्वस्थ जंगल स्थानीय आर्द्रता और वर्षा के स्वरूप को प्रभावित करने में भी भूमिका निभाते हैं, हालाँकि इसका प्रभाव अलग-अलग क्षेत्रों में अलग हो सकता है। जंगलों के नष्ट होने से मिट्टी की गुणवत्ता घट सकती है, जल प्रणालियाँ बाधित हो सकती हैं और सूखे से निपटने की प्राकृतिक क्षमता कमजोर पड़ सकती है। इसलिए पेड़ों की रक्षा जल संरक्षण, उपजाऊ भूमि और पर्यावरणीय सुरक्षा से सीधे जुड़ी हुई है।

अनगिनत जीवों का घर

पेड़ केवल मिट्टी में खड़ा एक पौधा नहीं, बल्कि एक जीवंत आवास है। पक्षी इसकी शाखाओं में घोंसले बनाते हैं, गिलहरियाँ इसकी टहनियों पर दौड़ती हैं, कीट इसके पत्तों और फूलों से भोजन प्राप्त करते हैं तथा असंख्य जीव इसकी छाल, जड़ों और आसपास की मिट्टी में रहते हैं। कई पेड़ वर्षभर वन्यजीवों को फल और बीज उपलब्ध कराते हैं।

विभिन्न प्रजातियाँ भोजन, आश्रय और प्रजनन के लिए विशेष प्रकार के पेड़ों पर निर्भर करती हैं। जब पेड़ काटे जाते हैं, तो ये प्राकृतिक संबंध टूट सकते हैं और वन्यजीवों की संख्या घट सकती है। देशी पेड़ विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि स्थानीय पक्षियों, कीटों और अन्य जीवों का विकास अक्सर इन्हीं पेड़ों के साथ हुआ है।

पेड़ केवल मिट्टी में खड़ा एक पौधा नहीं, बल्कि एक जीवंत आवास है। पक्षी इसकी शाखाओं में घोंसले बनाते हैं, गिलहरियाँ इसकी टहनियों पर दौड़ती हैं, कीट इसके पत्तों और फूलों से भोजन प्राप्त करते हैं तथा असंख्य जीव इसकी छाल, जड़ों और आसपास की मिट्टी में रहते हैं। कई पेड़ वर्षभर वन्यजीवों को फल और बीज उपलब्ध कराते हैं।

जैव विविधता की रक्षा के लिए केवल कोई भी पेड़ लगा देना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए उपयुक्त देशी प्रजातियों का चयन, पुराने पेड़ों का संरक्षण और आपस में जुड़े हरित क्षेत्रों की रक्षा आवश्यक है। विभिन्न प्रकार के पेड़ों वाला क्षेत्र वन्यजीवों के लिए एक ही प्रजाति के पेड़ों से भरे क्षेत्र की तुलना में अधिक उपयोगी हो सकता है।

वनों की कटाई की बढ़ती कीमत

तेजी से होता शहरीकरण, सड़क निर्माण, खनन, औद्योगिक विस्तार और कृषि संबंधी दबाव अनेक क्षेत्रों में पेड़ों के अस्तित्व के लिए खतरा बन रहे हैं। अक्सर उनके दीर्घकालिक पर्यावरणीय लाभों पर पर्याप्त विचार किए बिना पेड़ों को काट दिया जाता है। विकास आवश्यक है, लेकिन इसकी कीमत ऐसे प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करके नहीं चुकाई जानी चाहिए, जिनकी भरपाई करना कठिन है।

पेड़ों की कमी से शहरों में गर्मी बढ़ सकती है, मिट्टी का कटाव तेज हो सकता है, वन्यजीवों के आवास घट सकते हैं और कृषि तथा मानव बस्तियों को सहारा देने वाली प्राकृतिक प्रणालियाँ कमजोर पड़ सकती हैं। जिन समुदायों को ठंडे स्थानों और हरित क्षेत्रों तक सीमित पहुँच प्राप्त है, वे अत्यधिक गर्मी से अधिक प्रभावित हो सकते हैं।

किसी पुराने पेड़ की जगह नया पौधा लगाने से उसकी छाँव, कार्बन संचित करने की क्षमता, जीवों के लिए आश्रय और अन्य पारिस्थितिक लाभ तुरंत वापस नहीं मिलते। नए पौधों को समान लाभ देने के लिए वर्षों तक विकास और देखभाल की आवश्यकता होती है। उचित देखभाल के अभाव में कई पौधे जीवित भी नहीं रह पाते।

इसलिए सबसे जिम्मेदार दृष्टिकोण यही है कि जहाँ तक संभव हो, मौजूदा पेड़ों को बचाया जाए और विकास कार्यों को पर्यावरण के अनुकूल बनाया जाए।

जागरूकता से कार्रवाई तक

पेड़ों का संरक्षण व्यावहारिक प्रयासों से शुरू होता है। विद्यालय, महाविद्यालय, सामाजिक संगठन और स्थानीय प्रशासन वृक्षारोपण अभियान चला सकते हैं, लेकिन पौधे लगाने के बाद उनकी लंबे समय तक देखभाल करना भी आवश्यक है। देशी प्रजातियों का चयन स्थानीय जलवायु, मिट्टी, उपलब्ध स्थान और पानी की स्थिति के अनुसार किया जाना चाहिए।

नए पौधों को पशुओं के चरने, नुकसान और उपेक्षा से बचाना जरूरी है। शुरुआती वर्षों में नियमित पानी देना, आवश्यकता के अनुसार मिट्टी पर जैविक आवरण बिछाना और पौधों के स्वास्थ्य की निगरानी करना उनके जीवित रहने की संभावना बढ़ा सकता है। अनुपयुक्त स्थानों पर बहुत अधिक पेड़ लगाना या आक्रामक विदेशी प्रजातियों को बढ़ावा देना नई पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा कर सकता है।

नागरिक पुराने पेड़ों की रक्षा कर सकते हैं, अवैध कटाई की सूचना संबंधित अधिकारियों को दे सकते हैं और पार्कों, सड़क किनारे की हरियाली तथा सामुदायिक वनों को बचाने के लिए लोगों को प्रेरित कर सकते हैं। विद्यालयों में विद्यार्थियों को छोटे हरित क्षेत्रों की देखभाल करने और पेड़ों से मिलने वाली पारिस्थितिक सेवाओं को समझने के अवसर दिए जा सकते हैं।

सरकारों को शहरी नियोजन में पेड़ों की सुरक्षा को शामिल करना चाहिए, भूमि के सतत उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए और क्षतिपूर्ति के रूप में किए जाने वाले वृक्षारोपण कार्यक्रमों की उचित निगरानी सुनिश्चित करनी चाहिए। व्यावसायिक संस्थाओं को भी समझना चाहिए कि पर्यावरणीय जिम्मेदारी केवल दिखावे के लिए पौधे लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्रों की वास्तविक रक्षा करना भी आवश्यक है।

एक ऐसा ऋण, जिसे चुकाना हमारा कर्तव्य है

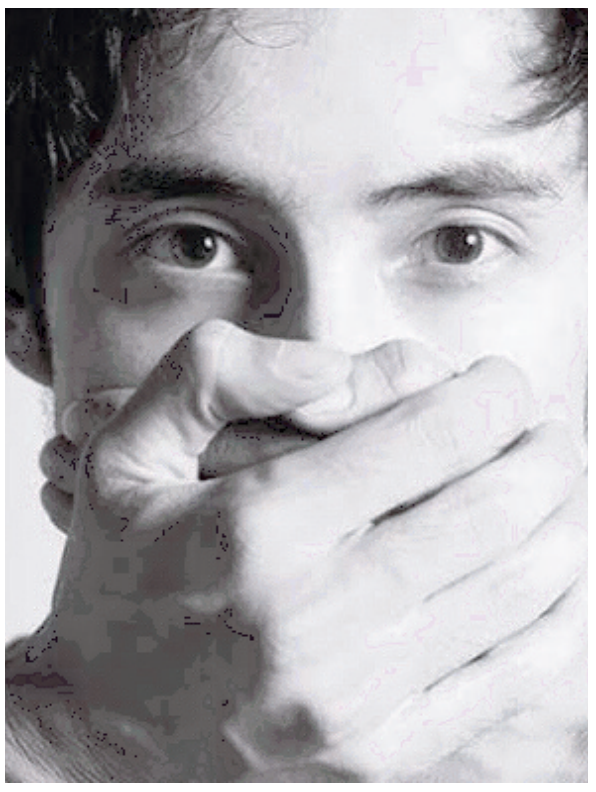
पेड़ों का योगदान उस समय से शुरू हो जाता है, जब हम उनकी छाँव में बैठना भी नहीं जानते, और हमारे जाने के बाद भी जारी रहता है। वे हवा, पानी, मिट्टी, जलवायु और जैव विविधता को सहारा देते हैं, जिन पर हमारा जीवन निर्भर है। उनके लाभ उन लोगों तक भी पहुँचते हैं, जिन्हें शायद यह पता नहीं होता कि किस पेड़ ने उनके स्वास्थ्य या आसपास के पर्यावरण की रक्षा में योगदान दिया है।

हम प्रकृति की इस उदारता का ऋण केवल शब्दों से नहीं चुका सकते। हमें मौजूदा जंगलों की रक्षा करनी होगी, उपयुक्त पेड़ लगाने होंगे, नए पौधों की देखभाल करनी होगी और ऐसी संस्कृति विकसित करनी होगी जो हरियाली को केवल सजावट नहीं, बल्कि जीवन के लिए आवश्यक संपदा समझे।

संरक्षित किया गया प्रत्येक पेड़ स्वस्थ पर्यावरण की दिशा में एक कदम है। देखभाल के साथ विकसित किया गया प्रत्येक पौधा भविष्य से किया गया एक वादा है। छाँव से साँसों तक और मिट्टी से पानी तक, पेड़ जीवन की बुनियाद को मजबूत बनाते हैं।

आइए, किसी पेड़ का मूल्य उसकी लकड़ी से मिलने वाले पैसों से नहीं, बल्कि उससे सहारा पाने वाले जीवन, स्वच्छ हवा में उसके योगदान और हमारे लिए संभव बनाए गए बेहतर भविष्य से आँकें।

जीभ: शब्दों की शक्ति और वाणी का महत्व



डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य | शैक्षिक स्तंभकार | मलोट, पंजाब

एक राजा था, जो बहुत कठोर स्वभाव का था। वह सभी को गालियाँ देता, ताने मारता और धमकियाँ देता था। उसके सामने बोलने का साहस किसी में नहीं था।

एक दिन राजा ने अपने दरबारियों से कहा, "मेरे पास वह वस्तु लेकर आओ, जो तुम्हें सबसे अधिक बुरी लगती है।"

अगले दिन कोई गंदगी लेकर आया, कोई मिट्टी और कोई सड़ा हुआ भोजन। लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति किसी मृत व्यक्ति की जीभ काटकर ले आया।

राजा ने जीभ को देखकर पूछा, "इसमें ऐसी क्या बुराई है?"

बुद्धिमान व्यक्ति ने उत्तर दिया, "महाराज! यही सारी बुराइयों की जड़ है। तलवार से लगे घाव का उपचार संभव है, लेकिन कटु वचनों से घायल हुए हृदय का दर्द आसानी से नहीं मिटता। जीभ ही ऐसे कड़वे शब्द बोलती है, जो दूसरों के मन को गहरी चोट पहुँचाते हैं।"

यह सुनकर राजा को कुछ लज्जा महसूस हुई, क्योंकि वह स्वयं सबसे अधिक कटु वचन बोलता था। फिर भी वह चुप रहा।

अगले दिन राजा ने दरबारियों से कहा, "आज मेरे पास वह वस्तु लेकर आओ, जो तुम्हें सबसे अच्छी लगती है।"

अगले दिन कोई घी लेकर आया, कोई चीनी, कोई शहद और कोई फूल। लेकिन वही बुद्धिमान व्यक्ति एक बार फिर मृत व्यक्ति की जीभ लेकर उपस्थित हुआ।

राजा आश्चर्यचकित होकर बोला, "कल तुमने कहा था कि जीभ से बुरी कोई वस्तु नहीं है। आज मैंने सबसे अच्छी वस्तु लाने को कहा था, फिर तुम जीभ ही क्यों ले आए?"

बुद्धिमान व्यक्ति ने विनम्रता से उत्तर दिया, "महाराज! जीभ ही सबसे बुरी भी है और सबसे अच्छी भी। जब इससे कटु वचन निकलते हैं, तो यह रिश्तों में दरार डाल देती है। लेकिन जब यही प्रेम, मधुरता, सम्मान और करुणा से बोलती है, तो टूटे हुए रिश्तों को जोड़ सकती है। जब इससे किसी दुखी व्यक्ति को सांत्वना मिलती है, किसी निराश व्यक्ति को प्रोत्साहन मिलता है और ईश्वर का नाम लिया जाता है, तब इससे सुंदर कुछ भी नहीं होता।"

उसने आगे कहा, "महाराज! इसलिए अपनी जीभ का उपयोग सोच-समझकर करना चाहिए। याद रखिए, जीभ पर लगा घाव जल्दी भर सकता है, लेकिन जीभ से दिया गया घाव कभी-कभी जीवन भर दर्द देता रहता है।"

शिक्षा

वाणी मनुष्य के व्यक्तित्व का दर्पण है। हमारे शब्द किसी के चेहरे पर मुस्कान ला सकते हैं और किसी की आँखों में आँसू भी। इसलिए बोलने से पहले सोचें, क्रोध में भी मर्यादा बनाए रखें और हमेशा ऐसे शब्दों का चुनाव करें, जो दूसरों के हृदय को चोट पहुँचाने के बजाय उन्हें सम्मान, प्रेम और आशा प्रदान करें।

मीठे बोल सबसे सस्ता उपहार हैं, लेकिन उनका मूल्य अनमोल है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

त्योहारों के सीजन में नाबालिगों को वाहन देना पड़ सकता है भारी, अभिभावक बरतें विशेष सावधानी : एसपी सिद्धान्त जैन

नाबालिगों द्वारा वाहन चलाने से दुर्घटनाओं का खतरा, नियमों की अनदेखी करने वाले अभिभावकों के खिलाफ भी हो सकती है कानूनी कार्रवाई

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) त्योहारों के सीजन में बाजारों और सड़कों पर बढ़ती आवाजाही को देखते हुए हिसार पुलिस ने अभिभावकों से अपील की है कि वे अपने नाबालिग बच्चों को किसी भी परिस्थिति में दोपहिया या चारपहिया वाहन चलाने के लिए न दें। बच्चों की सुरक्षा और सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए अभिभावकों की जिम्मेदारी बेहद महत्वपूर्ण है। थोड़ी-सी लापरवाही बच्चे के साथ-साथ सड़क पर चलने वाले अन्य लोगों के लिए भी गंभीर खतरा बन सकती है।

पुलिस अधीक्षक हिसार सिद्धान्त जैन, आईपीएस ने कहा कि कई बार अभिभावक बच्चों की जिद या सुविधा के चलते उन्हें वाहन की चाबी सौंप देते हैं, जबकि ऐसा करना खतरनाक साबित हो सकता है। नाबालिगों में यातायात नियमों और सड़क पर आने वाली परिस्थितियों को समझने का पर्याप्त अनुभव नहीं होता। त्योहारों के दौरान बाजारों और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में वाहन चलाना और भी जोखिमपूर्ण हो जाता है।

अभिभावक इन बातों का रखें विशेष ध्यान:

– अपने नाबालिग बच्चों को मोटरसाइकिल, स्कूटी, कार या अन्य मोटर वाहन चलाने की अनुमति न दें।

– वाहन की चाबी बच्चों की पहुंच से दूर रखें और उन्हें यातायात नियमों के प्रति जागरूक करें।

– बच्चों को समझाएं कि सड़क पर स्टंट करना, तेज गति से वाहन



चलाना और बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चलाना जानलेवा हो सकता है।

– त्योहारों के दौरान बच्चों को बाजारों और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में वाहन लेकर जाने से रोकें।

– स्वयं भी हेलमेट, सीट बेल्ट और यातायात नियमों का पालन करके बच्चों के सामने जिम्मेदार उदाहरण प्रस्तुत करें।

नाबालिग को वाहन देना कानूनी रूप से भी पड़ सकता है भारी

मोटर वाहन अधिनियम के तहत नाबालिग द्वारा वाहन चलाने या वाहन चलाने की अनुमति देने पर संबंधित वाहन मालिक अथवा अभिभावक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई हो सकती है। कानून के प्रावधानों के अनुसार, ऐसे मामलों में वाहन के पंजीकरण से संबंधित कार्रवाई और जुर्माना भी लगाया जा सकता है।

हिसार पुलिस की आमजन से अपील है कि त्योहारों की खुशियों को सड़क दुर्घटनाओं में न बदलने दें। बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता दें और उन्हें निर्धारित कानूनी उम्र तथा वैध ड्राइविंग लाइसेंस की पात्रता पूरी होने के बाद ही वाहन चलाने दें।

आपकी एक सावधानी, आपके बच्चे और दूसरे परिवारों की सुरक्षा की गारंटी बन सकती है।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का संदेश लेकर निकली अंतरराज्यीय बाइक रैली 95 बटालियन सीआरपीएफ ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना



एकता दिवस पर 95वीं बटालियन सीआरपीएफ ने पूर्वोत्तर के 47 जांबाज बाइकर्स का किया भव्य स्वागत

(संतोष कुमार सिंह)

वाराणसी :- पुलिस लाइन वाराणसी में पूर्वोत्तर राज्य से आये मोटर बाइकर का राजेश्वर एस0 बालापुरकर कमांडेंट-95 बटालियन द्वारा पुष्प गुच्छ देकर एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया तथा आगे के सफर के लिए हरी झंडी दिखाकर शुभकामना सहित रवाना किया। यह गरिमामयी बाइक रैली नॉर्थ ईस्ट के आठ राज्यों के जांबाज पुलिसकर्मियों के 47 जांबाज चालकों से सुसज्जित यह दल बिहार के आरा बक्सर और वाराणसी से होते हुए 31 अक्टूबर 2026 को केवड़िया गुजरात पहुंचेगी। वाराणसी में आयोजित स्वागत समारोह के दौरान 95 बटालियन सीआरपीएफ के कमांडेट द्वारा बताया कि इस अंतरराज्यीय बाइक रैली का मुख्य उद्देश्य लौह पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल के सपनो के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को साकार करना है। इसके साथ ही यह रैली युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए 'फाइट अगेंस्ट ड्रग्स' (नशामुक्त समाज का निर्माण) का एक बेहद महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश भी जन-जन तक पहुंचा रही है।

95 बटालियन सीआरपीएफ के कमांडेट द्वारा रैली में शामिल सभी बहादुर जवानो के उज्ज्वल भविष्य और उनकी सुरक्षित यात्रा की मंगलकामना दिया गया। इस अवसर पर 95 बटालियन सीआरपीएफ के कमांडेट राजेश्वर एस.बालापुरकर राजेश कुमार (द्वितीय कमान अधिकारी), स्थानीय पुलिस के राज कुमार त्रिपाठी, पुलिस उपाधीक्षक, (ANTF), रमाकांत पांडे, निरीक्षक प्रतिसार, निरीक्षक प्रिंस सिंह, विवेक चंद्र राय के साथ बड़ी संख्या में जवान उपस्थित रहे ।।

दुर्गापूजा मेले में असुरक्षित खाद्य सामग्री नष्ट, लेकिन खाद्य सुरक्षा विभाग की जवाबदेही पर सवाल बरकरार



छापेमारी और जागरूकता अभियान तक सीमित कार्रवाई? जांच रिपोर्ट, दोषियों पर दंड और बड़ी कार्रवाई का ब्योरा सार्वजनिक करने की मांग

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

दुर्गापूजा और दशहरा मेले में लोगों की सेहत सुरक्षित रखने के लिए खाद्य सुरक्षा विभाग ने 16 से 18 अक्टूबर तक विभिन्न खाद्य स्टॉलों की जांच की। इस दौरान बासी, एक्सपायरी और कृत्रिम रंगों से युक्त खाद्य सामग्री मिलने पर उसे नष्ट किया गया। खाद्य कारोबारियों को स्वच्छता, खाद्य पदार्थों के सुरक्षित रखरखाव और निर्धारित नियमों के पालन की हिदायत भी दी गई। हालांकि, इस कार्रवाई ने एक बड़ा सवाल खड़ा किया है—क्या राउरकेला में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विभाग की सक्रियता केवल त्योहारों और मेलों तक सीमित है?

खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और शुद्धता सीधे जनस्वास्थ्य से जुड़ा विषय है। ऐसे में केवल संदिग्ध खाद्य सामग्री नष्ट करने और कारोबारियों को समझाइश देने से विभाग की जिम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती। आम जनता यह जानना चाहती है कि नियमित बाजारों, मिठाई दुकानों, होटलों, रेस्तरां और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों में मिलावट की जांच कितनी प्रभावी ढंग से हो रही है तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध क्या कार्रवाई की गई है।

दस वर्षों से जमे अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर उठते सवाल

विभाग में लंबे समय से पदस्थ अधिकारियों की कार्यशैली और जवाबदेही की समीक्षा की मांग भी उठनी स्वाभाविक है। यदि नियमित निरीक्षण और छापेमारी हो रही है, तो उनकी संख्या, जब्त खाद्य पदार्थों का विवरण, प्रयोगशाला जांच रिपोर्ट, दोषियों पर लगाए गए जुर्माने तथा अभियोजन की स्थिति सार्वजनिक क्यों नहीं की जाती? कार्रवाई के परिणाम सामने नहीं आने से विभाग की प्रभावशीलता पर संदेह पैदा होता है।

हालांकि, उपलब्ध सूचना के आधार पर किसी अधिकारी की मिलीभगत या भ्रष्टाचार को प्रमाणित नहीं माना जा सकता, लेकिन पारदर्शिता के अभाव में सांठगांठ की आशंकाओं को भी खारिज करना कठिन हो जाता है।

जनस्वास्थ्य के लिए पारदर्शिता जरूरी

राउरकेला महानगर निगम और खाद्य सुरक्षा विभाग को समन्वित अभियान चलाकर नियमित जांच, प्रयोगशाला परीक्षण और कार्रवाई का सार्वजनिक विवरण जारी करना चाहिए। जांच रिपोर्ट ऑनलाइन उपलब्ध कराने, दोषी कारोबारियों पर नियमानुसार कार्रवाई और शिकायतों के त्वरित निपटारे की व्यवस्था जरूरी है।

त्योहारों में कुछ खाद्य सामग्री नष्ट करना सकारात्मक कदम है, लेकिन असली कसौटी निरंतर निगरानी और ठोस परिणाम हैं। आखिरकार, जनता को आश्वासन नहीं, सुरक्षित भोजन और जवाबदेह प्रशासन चाहिए।

कन्या पूजन की थाली और समाज का दोहरा चरित्रः क्या यही हमारी नारी शक्ति की भक्ति है।

हरिओम वाजपेई 'नादान'

शहर में आज महाअष्टमी का पावन पर्व उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। सुबह से हर गली और हर घर से एक ही गुहार सुनाई दे रही है।क्या आपके घर कन्या मिलेगी लोग थालियों में हलवा-पूरी सजाकर और नन्हे हाथों में रोली-अक्षत लगाने के लिए कन्याओं को ढूँढ रहे हैं। आरती की थाली में सजा दीप लिए, लोग सर झुकाकर माँ दुर्गा का स्वरूप मानी जाने वाली छोटी-छोटी बच्चियों के पैर छूने की होड़ में हैं।लेकिन, क्या कभी हमने शांत मन से इस दोहरे चरित्र को टटोला है यह एक कड़वा सच है जो अंतरात्मा को कचोटता है वही कन्या जब नौ महीने माँ के गर्भ में पलती है, तो परिवारों के चेहरे पर उदासी की छाया छा जाती है। 'वंश बढ़ाने वाला' ढूँढने के फेर में न जाने कितनी माताओं की कोख में ही कन्याओं की चीखें घोंट दी जाती हैं !और जब वही कन्या बड़ी होती है, पढ़ लिख कर किसी के घर की बहू बनकर जाती है, तो उसे 'कम दहेज' का ताना मिलता है या फिर बेटे को जन्म न दे पाने के लिए उलाहनों की आग में झोंक दिया जाता है।आज के इस पावन पर्व पर सवाल बहुत सीधा है गर्भ में जिसे मार दिया और समाज में जिसे ताने दिए, उसी कन्या के पैर आज इस ढोंग से छूने से क्या देवी प्रसन्न हो जाएंगी नारी शक्ति ही वास्तविक दैवीय शक्ति है। अष्टमी पूजन का असली उद्देश्य केवल एक दिन हलवा पूरी खिलाकर या दो रुपये का सिक्का देकर इतिश्री कर लेना नहीं है। नारी शक्ति वही साक्षात दैवीय शक्ति है जो इस संपूर्ण संसार को जन्म देती है और अपने रक्त से सींचती है जो बेटी, बहन, पत्नी और माँ बनकर जीवन के हर पल में केवल हमारा शुभ और कल्याण चाहती है।



अगर हम अपने घर की बेटियों को सुरक्षा, सम्मान और बराबरी का अधिकार नहीं दे सकते अगर हम घर आई बहू को अपनी बेटी मानकर उसका स्नेह नहीं दे सकते, तो यह अष्टमी पूजन महज एक दिखावा और छलावा है।

समाज से 'नादान' का आह्वान है विचारों की बलि दें, बेटियों का सम्मान करें ! माँ दुर्गा की सच्ची पूजा पशु-बलि या केवल उपवास में नहीं, बल्कि अपने भीतर बसी 'संकीर्ण मानसिकता' की बलि देने में है।जिस दिन हमारे देश के हर घर में बेटी के जन्म पर उत्सव मनाया जाएगा, बहू को उलाहने नहीं बल्कि सम्मान और प्यार मिलेगा और हर स्त्री को खुलकर जीने और उड़ने का आसमान मिलेगा उसी दिन सही अर्थों में महाअष्टमी का पूजन पूर्ण माना जाएगा।आइए, हम सब इस अष्टमी पर केवल कन्या के चरण न छूएं, बल्कि नारी शक्ति को जीवनभर सम्मान देने का संकल्प लें।

भारत इंटरनेशनल राइस कॉन्फ्रेंस 23-25 अक्टूबर 2026 क्या बदलेगी वैश्विक चावल अर्थव्यवस्था?

19 अक्टूबर को गन्ना-आधारित एथेनॉल खरीद पर रोक से चीनी बाजार में नई हलचल — महंगाई बनाम खाद्य सुरक्षा, चीनी बनाम एथेनॉल और कारोबार बनाम प्रतिस्पर्धा

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया (महाराष्ट्र)

स्थान: नई दिल्ली, भारत मंडपम, प्रगति मैदान

मुख्य तथ्य

– **आयोजन:** भारत इंटरनेशनल राइस कॉन्फ्रेंस (BIRC 2026) — दूसरा संस्करण

– **तिथि:** 23, 24, 25 अक्टूबर 2026

– स्थान: भारत मंडपम, हॉल 4 और 5, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

– आयोजक: इंडियन राइस एक्सपोर्टर्स फेडरेशन, संस्थागत भागीदारी — APEDA

– लक्ष्य: 120+ देश, 30,000+ प्रतिभागी

– बड़ा फैसला: 19 अक्टूबर 2026 — 2026-27 आपूर्ति वर्ष के लिए गन्ने के रस, शुगर सिरप और बी-हेवी शीरे से बने एथेनॉल की तेल कंपनियों द्वारा खरीद पर रोक

मुख्य बिंदु

1. दुनिया की नज़रें भारत पर खाद्य महंगाई, जलवायु परिवर्तन, परिवहन लागत और आपूर्ति शृंखला की अनिश्चितता ने पूरी दुनिया को चिंतित किया है। BIRC 2026 केवल प्रदर्शनी नहीं, कृषि, खाद्य सुरक्षा, निर्यात, तकनीक, बैंकिंग, लॉजिस्टिक्स और वैश्विक व्यापार का मंच है।

2. चावल की महंगाई — कीमतों में आग के पीछे क्या है? बासमती, गैर-बासमती, सोना मसूरी, पोन्नी, महीन और सुपर-फाइन — हर किस्म के भाव अलग हैं। दक्षिण भारत में 25 किलो बोरी के भाव 1,450 रुपये से बढ़कर 1,850-2,000 रुपये तक जाने के दावे सामने आए हैं।

– 1,450 से 1,850 रुपये = लगभग 27.6% वृद्धि

– 1,450 से 2,000 रुपये = लगभग 37.9% वृद्धि

इसे पूरे देश में 50% वृद्धि का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कारण — मानसून का असमान वितरण, कीट, त्योहारी मांग, भंडारण, मिलिंग और परिवहन लागत।

सरकारी बफर स्टॉक के आंकड़े — लगभग 38 मिलियन टन चावल बनाम बफर मानक लगभग 10 मिलियन टन। भारतीय व्हाइट राइस लगभग 385 डॉलर/टन बनाम वैश्विक भाव 420 डॉलर/टन — लगभग 8.3% कम, लेकिन किस्म और शर्तों की तुलना में सावधानी जरूरी है।

3. चीनी पर 19 अक्टूबर का फैसला क्यों महत्वपूर्ण है? सरकार ने गन्ना-आधारित एथेनॉल को खरीद से बाहर किया ताकि घरेलू चीनी की उपलब्धता बनी रहे और कीमतों पर दबाव कम हो। यह फैसले का दोहरा असर है:

– उपभोक्ता के लिए: चीनी की आपूर्ति बढ़ने से संभावित राहत

– मिलों के लिए: एथेनॉल में किए निवेश की रणनीति बदलनी होगी, अनाज-आधारित एथेनॉल पर असर पड़ सकता है

4. BIRC 2026 — तीन दिन, तीन आयाम

– दिन 1: नीति, खाद्य सुरक्षा और ज्ञान-विमर्श

– दिन 2: व्यापारिक संपर्क, खरीदार-विक्रेता बैठकें (B2B)

– दिन 3: नवाचार, भविष्य की तकनीक और राइस फेस्टिवल (B2C)

5. B2B बनाम B2C — कारोबार से उपभोक्ता तक

– B2B: निर्यातक-आयातक का बड़ा ऑर्डर, मिल-पैकेजिंग अनुबंध, बैंक-लॉजिस्टिक्स से वित्तपोषण। बैठक ऑर्डर की गारंटी नहीं है।

– B2C: आम उपभोक्ता को 200+ किस्मों, उत्पादों और नई तकनीक से सीधा जोड़ना।

6. चावल कारोबार के अनदेखे नायक बैंक (ऋण, विदेशी मुद्रा), बीमा (माल, भंडारण), पैकेजिंग (सुरक्षा, ब्रांडिंग), लॉजिस्टिक्स (शिपिंग, बंदरगाह, कस्टम्स), गुणवत्ता जांच एजेंसियां, किसान, FPO, बीज कंपनियां, गोदाम और स्टार्टअप — सभी इस इकोसिस्टम के अंग हैं।

समग्र विश्लेषण भारत दुनिया का प्रमुख चावल उत्पादक और निर्यातक है। BIRC 2026 से भारतीय निर्यातकों को नए बाजार, गुणवत्ता मानक और दीर्घकालीन साझेदारी का अवसर मिलेगा। लेकिन सफलता केवल कम कीमत से नहीं मिलेगी — गुणवत्ता, समय पर आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय मानकों का अनुपालन और पारदर्शी दस्तावेज ही टिकाऊ प्रतिस्पर्धा की कुंजी हैं।

चीनी बनाम एथेनॉल का फैसला बताता है कि खाद्य सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा के बीच संतुलन बनाना सरकार की बड़ी चुनौती है। आम आदमी की थाली की महंगाई और मिलों के कारोबार के बीच नीति को यह संतुलन साधना होगा।

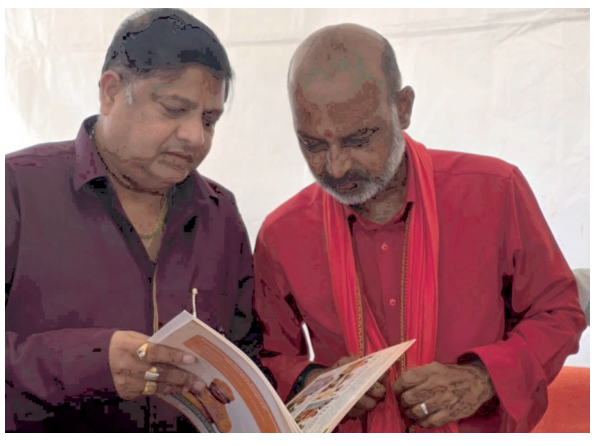
निष्कर्ष: तीन दिन में दुनिया के खाद्य कारोबार का खेल पूरी तरह नहीं बदलेगा, लेकिन BIRC 2026 भारत को वैश्विक चावल व्यापार के केंद्र में स्थापित करने, खाद्य सुरक्षा पर नई बहस छेड़ने और चावल-चीनी के बाजार में नई दिशा देने का ऐतिहासिक अवसर देगा।



केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बंदी संजय की धर्म के प्रति आस्था अनुकरणीय:पेरिका सुरेश

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक



नई दिल्ली।दशहरा एवं शारदीय नवरात्रि के शुभ अवसर पर, करीमनगर के पवित्र श्री महा शक्ति मंदिर में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री एवं करीमनगर के सांसद बंदी संजय कुमार से भाजपा के राष्ट्रीय सोशल मीडिया एवं आईटी सदस्य पेरिका सुरेश को मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।इस आध्यात्मिक अवसर पर भाजपा राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा के मीडिया, आईटी एवं सोशल मीडिया सदस्य श्री सुरेश के साथ जी.आनंद गौड़, तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा ओबीसी मोर्चा और तेलंगाना भाजपा ओबीसी मोर्चा के अन्य प्रमुख वरिष्ठ नेताओं ने भाग लिया।भवानी दीक्षा के दौरान देवी श्री महा शक्ति के प्रति धर्म अनुरागी बंदी संजय जी की भक्ति और जनसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को देखना वास्तव में प्रेरणादायक था।देवी दुर्गा राष्ट्र और तेलंगाना की जनता की निरंतर सेवा की उनको शक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और सफलता का आशीर्वाद दें।श्री सुरेश ने कहा कि विजयदशमी अधर्म पर धर्म की विजय का पर्व हैं। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हम सभी को अपने दुर्गुणों का त्याग कर धर्म, न्याय एवं मानवता को अपनाने का प्रण लेने की जरूरत है। उन्होंने विजयदशमी के अवसर पर विश्व कल्याण की कामना करते हुए कहा कि सनातन धर्म पूरे विश्व को अपना परिवार मानता है तथा उनके सुख, समृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।सनातन धर्म की यह व्यापक सोच एवं खूबसूरती ही इसकी पहचान एवं आदर्श है। हिंदू हृदय सम्राट पेरिका सुरेश सनातन धर्म को स्थापित करने एवं इसके प्रचार प्रसार में दिन-रात लगे रहते हैं।अयोध्या में भगवान राम के मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर इन्होंने तन मन धन से सहयोग कर लंबे समय तक वहां अपनी सेवा दी। तिरुपति में आगंतुको के ठहरने के लिए कॉटेज निर्माण में भी आर्थिक सहयोग दिया। प्रयागराज महाकुंभ के अवसर पर भी इन्होंने हजारों लोगों के भोजन एवं दान दक्षिणा में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई। चारों धाम की यात्रा तथा आर्थिक सहयोग कर श्री सुरेश ने अपने जीवन को कृतार्थ किया।

BS-IV डीजल टैक्सियों पर प्रतिबंध, महंगे चालान और E20 पेट्रोल के खिलाफ परिवहन जगत में आक्रोश

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन ने BS-IV डीजल वाहनों पर प्रस्तावित प्रतिबंध, महंगे ट्रैफिक चालान, पैनिक बटन एवं VLTD उपकरणों के खर्च, E20 पेट्रोल और स्कूल बसों को इलेक्ट्रिक करने की प्रस्तावित नीति को लेकर चिंता जताई है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट ने प्रेस क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में केंद्र सरकार, दिल्ली सरकार और संबंधित विभागों से परिवहन क्षेत्र की समस्याओं पर गंभीरता से विचार करने की मांग की।

संजय सम्राट ने कहा कि परिवहन संचालक प्रदूषण नियंत्रण और यात्रियों की सुरक्षा के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन इन उद्देश्यों के नाम पर छोटे टैक्सी-बस संचालकों और ड्राइवरों पर लगातार आर्थिक बोझ डालना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि बदलते नियमों, पुराने वाहनों पर प्रतिबंध और बढ़ते परिचालन खर्च से लाखों परिवहन व्यवसायियों तथा उनके परिवारों की आजीविका प्रभावित होने की आशंका है।

BS-IV डीजल वाहनों पर प्रतिबंध को लेकर चिंता

एसोसिएशन ने एक नवंबर 2026 से लागू होने वाले बताए जा रहे BS-IV डीजल वाहनों संबंधी प्रतिबंधों पर चिंता व्यक्त की। संजय सम्राट ने मांग की कि प्रभावित टैक्सियों, बसों और अन्य व्यावसायिक वाहनों के संबंध में स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए जाएं। वाहन मालिकों को पर्याप्त समय दिया जाए और उनकी आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए न्यायसंगत राहत नीति बनाई जाए।

उन्होंने कहा कि अनेक वाहन मालिकों ने बैंक से ऋण लेकर वाहन खरीदे हैं। उत्सर्जन मानकों में लगातार बदलाव के कारण उनके निवेश और रोजगार पर असर पड़ सकता है। इसलिए नई तकनीक अपनाने के लिए पर्याप्त समय और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

पैनिक बटन, VLTD और महंगे चालानों पर सवाल

एसोसिएशन ने पैनिक बटन और वाहन लोकेशन ट्रैकिंग डिवाइस (VLTD) की कीमत, इंस्टॉलेशन, कार्यक्षमता और बार-बार होने वाले खर्चों की पारदर्शी जांच की मांग की। संजय सम्राट के अनुसार, यात्रियों की सुरक्षा के लिए तकनीकी उपकरण जरूरी हो सकते हैं, लेकिन उनकी लागत और उपयोगिता की निष्पक्ष समीक्षा भी होनी चाहिए, ताकि वाहन संचालकों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ न पड़े।

उन्होंने महंगे ट्रैफिक चालानों और व्यावसायिक वाहनों के बीमा प्रीमियम को लेकर भी चिंता जताई। एसोसिएशन ने चालानों की राशि और संबंधित नियमों को न्यायसंगत बनाने तथा बीमा प्रीमियम में पारदर्शिता सुनिश्चित करने की मांग की।



45 दिनों में चालान भुगतान के नियम की समीक्षा की मांग

संजय सम्राट ने चालानों की भारी-भरकम राशि कम करने की मांग करते हुए कहा कि हजारों रुपये के जुर्माने छोटे परिवहन व्यवसायियों और ड्राइवरों के लिए बड़ी आर्थिक परेशानी पैदा करते हैं। उन्होंने चालान का भुगतान निर्धारित 45 दिनों के भीतर नहीं होने पर वाहन के विरुद्ध कठोर कार्रवाई किए जाने वाले प्रावधान की समीक्षा कर उसे निरस्त करने की मांग भी की।

उन्होंने कहा कि चालान लंबित रहने के कारण वाहन को सीज करने या उसके संचालन पर रोक लगाने जैसी कार्रवाई से वाहन मालिक का रोजगार और परिवार की आजीविका प्रभावित हो सकती है। सरकार को वाहन मालिकों को उचित सुनवाई, भुगतान के लिए पर्याप्त समय और शिकायत दर्ज कराने का अवसर देना चाहिए।

E20 पेट्रोल की गुणवत्ता और माइलेज की जांच की मांग

एसोसिएशन ने E20 एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल को लेकर उठ रही चिंताओं पर निष्पक्ष तकनीकी जांच कराने की मांग की। संजय सम्राट ने कहा कि ईंधन की गुणवत्ता, एथेनॉल मिश्रण के अनुपात, विभिन्न वाहनों की अनुकूलता और माइलेज संबंधी शिकायतों का विशेषज्ञों के माध्यम से परीक्षण किया जाना चाहिए।

उन्होंने सुझाव दिया कि तेल कंपनियों, वाहन निर्माताओं, तकनीकी संस्थानों और परिवहन संगठनों के प्रतिनिधियों को शामिल कर संयुक्त समिति बनाई जाए, ताकि तथ्यों के आधार पर समस्याओं का समाधान निकाला जा सके।

80 किमी प्रति घंटे की गति सीमा की समीक्षा हो

एसोसिएशन ने ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट वाले वाहनों के लिए 80 किलोमीटर प्रति घंटे की गति सीमा की तकनीकी और व्यावहारिक समीक्षा करने की मांग की। संजय सम्राट ने कहा कि सड़क सुरक्षा सर्वोपरि है, लेकिन नियम बनाते समय परिवहन व्यवसाय की वास्तविक जरूरतों और वाहनों की तकनीकी परिस्थितियों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

2030 तक CNG स्कूल बसों को इलेक्ट्रिक करने की नीति पर चिंता

स्कूल बसों को इलेक्ट्रिक वाहनों में बदलने की प्रस्तावित नीति पर चिंता व्यक्त करते हुए संजय सम्राट ने कहा कि नई CNG स्कूल बस की कीमत लगभग 40 लाख रुपये, जबकि इलेक्ट्रिक स्कूल बस की कीमत करीब सवा करोड़ से डेढ़ करोड़ रुपये तक बताई जा रही है। इतनी बड़ी लागत छोटे और मध्यम स्तर के बस संचालकों के लिए चुनौती बन सकती है।

उन्होंने आशंका जताई कि बस संचालकों पर कर्ज का बोझ बढ़ने से स्कूल परिवहन शुल्क में वृद्धि हो सकती है, जिसका असर गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों पर पड़ेगा। एसोसिएशन ने मांग की कि वैध CNG स्कूल बसों को उनकी निर्धारित वैधता, फिटनेस और लागू सुरक्षा मानकों के अनुसार चलने का विकल्प दिया जाए।

साथ ही, इलेक्ट्रिक बसों को अपनाने से पहले पर्याप्त सब्सिडी, सस्ता ऋण, चार्जिंग सुविधाएं और बैटरी सुरक्षा की ठोस व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। संजय सम्राट ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों के साथ बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा और अभिभावकों की आर्थिक स्थिति का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

दशहरे पर भ्रष्टाचार और मिलावटखोरी के पुतले जलाने की घोषणा

संजय सम्राट ने घोषणा की कि एसोसिएशन दशहरे के अवसर पर रावण के साथ भ्रष्टाचार और मिलावटखोरी के प्रतीकात्मक पुतलों का भी दहन करने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से आयोजित कर सरकार और प्रशासन का ध्यान परिवहन जगत की समस्याओं की ओर आकर्षित किया जाएगा।

उन्होंने कहा, "भ्रष्टाचार, मिलावटखोरी और अपारदर्शी व्यवस्था का सबसे अधिक नुकसान आम नागरिक, मेहनतकश ड्राइवर और छोटे परिवहन व्यवसायियों को उठाना पड़ता है। सरकार को प्रदूषण नियंत्रण के साथ-साथ रोजगार और आम जनता की आर्थिक स्थिति की भी रक्षा करनी चाहिए।"

सरकार से संवाद कर समाधान निकालने की अपील

एसोसिएशन ने केंद्र सरकार, दिल्ली सरकार और संबंधित विभागों से BS-IV डीजल वाहनों पर प्रतिबंधों की समीक्षा करने, पैनिक बटन एवं VLTD उपकरणों की लागत और कार्यक्षमता की जांच कराने, ट्रैफिक चालानों तथा व्यावसायिक वाहन बीमा को लेकर न्यायसंगत व्यवस्था बनाने और E20 पेट्रोल संबंधी शिकायतों की तकनीकी जांच कराने की मांग की।

संजय सम्राट ने कहा कि परिवहन संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर व्यावहारिक समाधान निकाला जाना चाहिए। उन्होंने जोर दिया कि प्रदूषण नियंत्रण, सड़क सुरक्षा और आधुनिक परिवहन व्यवस्था के विकास के साथ उन लाखों लोगों की आजीविका की रक्षा करना भी जरूरी है, जिनका परिवार टैक्सी, बस और अन्य व्यावसायिक वाहनों के संचालन पर निर्भर है।

एसोसिएशन ने सरकार से अपील की कि परिवहन क्षेत्र की समस्याओं पर जल्द संवाद शुरू किया जाए और ऐसे समाधान तैयार किए जाएं, जिनसे पर्यावरण संरक्षण, यात्रियों की सुरक्षा तथा परिवहन व्यवसायियों के आर्थिक हितों के बीच संतुलन कायम रह सके।

दशहरे पर रावण के साथ भ्रष्टाचार और मिलावटखोरी के पुतले भी जलाएंगे टैक्सी-बस संचालक: संजय सम्राट

हजारीबाग में अनुकंपा पर नौकरी पाने हेतु पत्नी ने मार डाला पति को



कथित प्रेमी एवं नाबालिग गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के हजारीबाग जिले के गिद्दी में अनुकंपा पर नौकरी पाने के लिए पत्नी ने अपने सीसीएलकर्मी पति मंगलेश पाल उर्फ हैप्पी हत्या करा दी. पुलिस ने इस हत्याकांड का 24 घंटे के अंदर खुलासा किया है. पुलिस के अनुसार, इस हत्याकांड की साजिश मंगलेश की पत्नी सोनाली, उसके ममेरे भाई और कथित प्रेमी कौशिक कुमार नौनिया तथा एक नाबालिग ने मिलकर रची थी. पुलिस ने हत्या में इस्तेमाल किये गये धारदार हथियार समेत कई सामान बरामद किये हैं. गिरफ्तार आरोपियों को जेल भेज दिया गया है

गिद्दी में सोमवार को आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में बड़कागांव के एसडीपीओ अमित आनंद ने बताया कि मंगलेश पाल की हत्या की साजिश उनकी पत्नी सोनाली और कौशिक कुमार नौनिया पिछले एक साल से रच रहे थे. पुलिस के मुताबिक, साजिश को अंजाम देने की कई कोशिशें पहले भी की गयी थीं, लेकिन वे सफल नहीं हो पायीं. एसडीपीओ ने बताया कि मंगलेश की हत्या के बाद सोनाली अनुकंपा के आधार पर नौकरी हासिल करना चाहती थी. पुलिस जांच में इसी मंशा से हत्या की साजिश रचने की बात सामने आयी है. हालांकि, अनुकंपा पर नौकरी मिलने के नियम और पात्रता अलग-अलग परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं.

पुलिस के अनुसार, मंगलेश पाल की हत्या के बाद सोनाली ने कथित तौर पर मनगढ़ंत कहानी बनाकर पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की. जांच के दौरान पुलिस ने तकनीकी और परिस्थितिजन्य साक्ष्य जुटाये. पूछताछ में गिरफ्तार आरोपियों ने हत्या में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है. पुलिस ने इसी आधार पर मामले के खुलासे की जानकारी दी

पुलिस ने घटनास्थल की जांच के दौरान और आरोपियों से पूछताछ के बाद कई अहम सामान बरामद किये हैं. इनमें खून से सना दाउली, चाकू, पोछा, दो मोबाइल फोन, मृतक और उनकी पत्नी के जले हुए मोबाइल, आरोपियों के खून से सने कपड़े तथा चप्पल शामिल हैं. पुलिस इन सामानों को जांच में अहम साक्ष्य मान रही है

एसडीपीओ अमित आनंद ने बताया कि हजारीबाग एसपी के निर्देश पर विशेष जांच टीम (एसआईटी) का गठन किया गया था. टीम ने एसएफएल, फिंगर प्रिंट विशेषज्ञों और डॉग स्क्वायड की मदद से घटनास्थल की जांच की. इसके अलावा तकनीकी और परिस्थितिजन्य साक्ष्य जुटाकर मामले की कड़ियों को जोड़ा गया

पुलिस के मुताबिक, कौशिक कुमार नौनिया गिद्दी स्थित सिटीजन फोरम स्कूल के पास सीसीएल क्वार्टर में कथित तौर पर अवैध रूप से रह रहा था. वहीं, नाबालिग आरोपी गिद्दी बस्ती के मंडाटांड़ का रहने वाला बताया गया है. नाबालिग की संलिप्तता सामने आने के बाद उसके खिलाफ किशोर न्याय कानून के प्रावधानों के तहत कार्रवाई की जायेगी. प्रेस कॉन्फ्रेंस में पुलिस निरीक्षक शाहीद रजा, गिद्दी थाना प्रभारी मो. इकबाल हुसैन, उरीमारी थाना प्रभारी रथु उरांव, रमेशचंद्र हजाम, एस. पूर्ति, शशिकांत प्रेमा तिर्की समेत पुलिस बल के कई जवान मौजूद थे. पुलिस ने कहा कि मामले में आगे की कानूनी कार्रवाई जारी है.

ओडिशा के भुवनेश्वर में जन्मे प्रज्ञान ओझा कौन हैं? टीम इंडिया में मिली बड़ी जिम्मेदारी

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: अपनी स्पिन गेंदबाजी से बड़े-बड़े बल्लेबाजों को परेशान करने वाले प्रज्ञान ओझा अब भारतीय क्रिकेट में एक बड़ी जिम्मेदारी संभालने जा रहे हैं। मैदान पर अपनी गेंदबाजी से पहचान बनाने वाले ओझा के सामने अब टीम इंडिया के लिए उपयुक्त खिलाड़ियों के चयन की चुनौती होगी।

खबरों के मुताबिक, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने 19 अक्टूबर 2026 को प्रज्ञान ओझा को भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम का नया मुख्य चयनकर्ता नियुक्त किया है। हालांकि, इस नियुक्ति की आधिकारिक पुष्टि की जानकारी संबंधित आधिकारिक स्रोतों से सत्यापित किया जाना आवश्यक है।

भुवनेश्वर में हुआ था जन्म

प्रज्ञान ओझा का जन्म 5 सितंबर 1986 को ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में हुआ था। वह बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज रहे हैं। घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन के दम पर उन्होंने भारतीय टीम में जगह बनाई। अपनी सटीक गेंदबाजी और विकेट लेने की



क्षमता के कारण उन्होंने क्रिकेट जगत में अलग पहचान बनाई।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन

प्रज्ञान ओझा ने भारत की ओर से टेस्ट, एकदिवसीय और टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेला। उन्होंने 24 टेस्ट मैचों में 113 विकेट हासिल किए। वहीं, 18 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में उनके नाम 21 विकेट दर्ज हैं। इसके अलावा, छह टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में उन्होंने 10 विकेट लिए।

आईपीएल में भी दिखाया दम

प्रज्ञान ओझा इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में डेक्कन चार्जर्स और मुंबई इंडियंस जैसी टीमों का हिस्सा रहे। अपनी स्पिन गेंदबाजी के दम पर उन्होंने कई मुकाबलों में प्रभावशाली प्रदर्शन किया। फरवरी 2020 में उन्होंने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लेने की घोषणा की थी।

चयन समिति में निभा चुके हैं भूमिका

प्रज्ञान ओझा भारतीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद भी क्रिकेट प्रशासन से जुड़े रहे हैं। वह पहले चयन समिति के सदस्य के रूप में काम कर चुके हैं। रिपोर्टों में दावा किया गया है कि टेस्ट क्रिकेट में वरिष्ठता के आधार पर बीसीसीआई ने उन्हें चयन समिति का अध्यक्ष बनाया है।

यदि मुख्य चयनकर्ता के रूप में उनकी नियुक्ति की आधिकारिक पुष्टि होती है, तो भारतीय टीम के लिए खिलाड़ियों के चयन और भविष्य की टीम रणनीति तय करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। ओडिशा में जन्मे इस पूर्व भारतीय स्पिनर का क्रिकेट प्रशासन में आगे बढ़ना राज्य के क्रिकेट प्रेमियों के लिए भी दिलचस्प विषय है।

नवीन पटनायक पर उच्च शिक्षा मंत्री का पलटवार, छात्र संघ चुनाव बंद करने को युवाओं ने बताया 'कलंकित अध्याय'

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर:ओडिशा में छात्र संघ चुनाव को लेकर सियासत तेज हो गई है। विपक्ष के नेता नवीन पटनायक की टिप्पणी के बाद उच्च शिक्षा मंत्री सूर्यवंशी सूरज ने उन पर तीखा पलटवार किया है। मंत्री सूर्यवंशी सूरज ने कहा कि ओडिशा में दो दिन पहले छात्र संघ चुनाव संपन्न हुए हैं, जबकि पिछले आठ वर्षों से ये चुनाव नहीं हो पा रहे थे। उन्होंने कहा कि छात्र संघ चुनाव बंद करने में नवीन पटनायक और उनके प्रेरकों की भूमिका को आज भी ओडिशा के छात्र और युवा समाज एक **'कलंकित अध्याय'** के रूप में देखते हैं।

मंत्री ने आरोप लगाया कि अपनी पार्टी को बचाने और पार्टी के भीतर नए नेतृत्व की स्वीकार्यता को सुरक्षित रखने के लिए नवीन पटनायक ने इस तरह के असत्य बयान दिए हैं। उन्होंने कहा कि नवीन पटनायक जैसे अनुभवी नेता से छात्र संघ चुनाव के संबंध में निराधार बयान दिलवाना उनके आसपास मौजूद लोगों की भूमिका पर सवाल खड़े करता है और इससे उनकी छवि और धूमिल हो रही है।

सूर्यवंशी सूरज ने कहा कि ओडिशा में छात्र संघ चुनाव ने जो सकारात्मक संदेश दिया है, उसे राज्य के छात्र और युवा अच्छी तरह समझ रहे हैं। किस राजनीतिक दल और किस संगठन के समर्थन से कितने छात्र नेता निर्वाचित हुए हैं, इसकी जानकारी राज्य की जनता को है। उन्होंने आगे कहा कि बार-बार झूठ बोलकर उसे सच साबित करने की कोशिश करना नवीन पटनायक जैसे अनुभवी नेता को शोभा नहीं देता। इस समय उन्हें छात्र समुदाय को उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित करने वाला संदेश देना चाहिए था। मंत्री ने कहा कि ओडिशा के छात्र और युवा समाज को भ्रम और गलतफहमी से दूर रखते हुए उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करना ही सभी का उद्देश्य होना चाहिए।

गोंडा जंक्शन पर चला स्वच्छता जागरूकता अभियान, रेल यात्रियों को सिंगल यूज प्लास्टिक से बचने का दिया संदेश

स्पेशल कैंपेन 6.0 के तहत गोंडा स्टेशन पर निकली जागरूकता रैली, रेल जनसंवाद से स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

(संतोष कुमार सिंह)

लखनऊ :- पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ मण्डल के मण्डल रेल प्रबंधक गौरव अग्रावाल के मार्गदर्शन में सम्पूर्ण मण्डल में 'स्पेशल केम्पेन 6.0' के अन्तर्गत स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है इसी परिप्रेक्ष्य में गोण्डा जंक्शन स्टेशन पर वरिष्ठ मण्डल विद्युत इंजीनियर (टीआरएस) आशीष कुमार मद्धेशिया के नेतृत्व में स्वच्छता जागरुकता रैली निकाली गयी तथा रेल जन संवाद का आयोजन किया गया। इस दौरान यात्रियों से संवाद स्थापित कर उन्हें स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया तथा स्टेशन परिसर में स्वच्छता जागरूकता रैली निकालकर यात्रियों से सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करने, कूड़े को कूड़ेदान में ही डालने तथा कपड़े की थैली का प्रयोग करने हेतु आग्रह किया गया।

इस अवसर पर एरिया मैनेजर, स्टेशन अधीक्षक, स्वास्थ्य निरीक्षक एवं अन्य रेल कर्मचारी उपस्थित रहे। लखनऊ मण्डल स्वच्छ, सुरक्षित एवं सुंदर रेल परिसर हेतु निरंतर प्रयासरत है।।



अहिरावण वध की लीला देख रोमांचित हुए दर्शक



नई दिल्ली: आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस-2 में कुंभकरण- मेघनाथ व अहिरावण वध कि लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्पेशल इफेक्ट, एल ई डी, कंप्यूटरराइड यंत्र व लेजर लाइट के उपयोग से युद्ध कौशल आकर्षण का केंद्र बना। भूतों और राक्षसों का उन्माद डरावना व अद्भुत कौशल से परिपूर्ण था। काली माता कि मंच पर उपस्थिति देख दर्शक रोमांचित हो गए। उन्होंने 11फुट लंबा और 11किलो वजन का मुकुट पहन रखा था। युद्ध के दौरान तलवार से तलवार और तीर से तीर टकराने पर चिंगारी निकलती हुई दिखाई दी। आज की लीला का उद्घाटन दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता व अजय भाई के द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के तौर पर भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग, दिल्ली नगर निगम स्टैंडिंग कमेटी की चेयरपर्सन सत्या शर्मा व गौरव खारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि सेवा को जीवन का मूल मंत्र बनाएं। इसके जीवंत प्रेरणा हमें श्रेष्ठतम सेवा व्रती स्वर्गीय मांगेराम गर्ग से मिलती है जिन्होंने अनेकों संस्थाओं का सृजन समाज सेवा के लिए किया। उनमें से आदर्श रामलीला कमेटी भी एक है जो कि रामलीला के साथ सेवा का प्रकल्प भी चलाती है। कथावाचक अजय भाई ने कहा कि रामायण का प्रत्येक भाग प्रेरणादायक है। श्री राम का चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ, कर्म प्रधान, आदर्शों एवं मर्यादाओं से युक्त अति विनम्र व प्रेम प्रधान है हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर मर्यादित जीवन जीना चाहिए। सलाहकार अनिल यादव ने जल संरक्षण व डेंगू रोकथाम के लिए दर्शकों को जागरूक किया। कार्यक्रम में प्रदीप गोयल कोषाध्यक्ष, राजेंद्र खंडेलवाल, रवि गर्ग, संदीप खंडेलवाल, सुमेधा गर्ग, उषा गोयल, रजनी गुप्ता उपस्थित रही।

हाहेसाड़ी में भक्तिमय माहौल में हुआ कलश विसर्जन, भंडारे में उमड़े श्रद्धालु



बाराचट्टी। बाराचट्टी प्रखंड के विभिन्न स्थानों पर नौ दिवसीय शारदीय नवरात्र के समापन पर सोमवार को पूजा-अर्चना, हवन और कलश विसर्जन किया गया। इस दौरान श्रद्धालुओं में खासा उत्साह देखने को मिला। धनगाई थाना क्षेत्र के पतलुका पंचायत अंतर्गत हाहेसाड़ी गांव में दुर्गापूजा समिति की ओर से नवमी के दिन शाम चार बजे कलश विसर्जन किया गया।

नौ दिनों तक मां दुर्गा की विधि-विधान से पूजा-अर्चना करने के बाद श्रद्धालुओं ने भक्तिमय माहौल में कलश विसर्जन किया। देवी मंदिर में पूजा-पाठ, हवन और अन्य धार्मिक अनुष्ठान संपन्न होने के बाद कलश यात्रा निकाली गई। इसके बाद श्रद्धालु कलश लेकर चौलीखार नदी पहुंचे, जहां विधि-विधान के साथ विसर्जन किया गया। इस दौरान सैकड़ों श्रद्धालु शामिल हुए। पूरा गांव माता रानी के जयकारों से गूंज उठा।

नवरात्र के समापन पर कुमारी कन्याओं को भोज कराया गया। वहीं, कलश विसर्जन शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न होने के बाद पूजा समिति की ओर से भव्य भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर जिला परिषद सदस्य अरविंद यादव, राजद प्रखंड अध्यक्ष कृष्णदेव यादव, पप्पू कुमार, पूजा समिति अध्यक्ष फूलदेव यादव, केडी यादव, विजय कुमार यादव, रघुनंदन यादव, रामानंदन यादव, महेश यादव, संदीप कुमार, सत्येंद्र साव और उमाशंकर साव सहित कई लोग मौजूद रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**